ऋषि प्रसाद

सिंहस्थ परिशिष्ट विशेषांक

द्विमासिक वर्ष : २ अंक : १ जुलाई-अगस्त १९९२

ऋषि प्रसाद

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

वर्ष : २

अंक : १

जुलाई - अगस्त १९९२

तंत्री : के. आर. पटेल

शुल्क वार्षिक : रु. २२
त्रिवार्षिक : रु. ६०
परदेश में वार्षिक : US $ २२ (डॉलर)
त्रिवार्षिक : US $ ६० (डॉलर)

* कार्यालय *

'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

परदेश में शुल्क भरने का पता :

International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N.J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : फोटोटेक्स्ट.
प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,
अहमदाबाद-३८० ००५ ने
अंकुर ऑफसेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में छापकर प्रकाशित किया।

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है।

'ऋषि प्रसाद' द्विमासिक दो वर्ष पूरे करके तीसरे वर्ष में प्रविष्ट हो रहा है। समाज ने इसे बहुत आदर दिया है। इसकी सेवा करने वाले साधकों ने नैतिक कर्त्तव्य और अपना धर्म समझकर इसे दूर दूर तक पहुँचाने का निष्काम भाव से प्रयास किया है। फलतः इकसठ हजार से भी अधिक सदस्य हो चुके हैं और इसके पाठक कितने लाख होंगे यह गिनना हमारे बसका नहीं है। हमें इस बात का खूब आनंद है कि हम भारतीय संस्कृति के, भगवान श्री राम, श्री कृष्ण, भगवान शिव और माता जगदंबा एवं सच्चे साधु, संत-महापुरुषों के दिव्य प्रसाद को देश-परदेश के पाठकों तक परोसने की सेवा में कल्पनातीत सफल हो रहे हैं।

'यह तन काचा कुंभ है फूटत न लागे वार ।'

गीता, रामायण, भागवत एवं उपनिषदों का अमृत और संत श्री आसारामजी बापू जैसे इस युग के आत्मवेत्ता, भक्ति, योग और वेदांत के अनुभवनिष्ठ मर्मज्ञ, कुंडलिनी योग के समर्थ आचार्य, प्राणीमात्र के परम हितैषी, सभी जातियों एवं पाँतियों के परम पूजनीय, स्मरणीय, वंदनीय, आत्मा-परमात्मा से तदाकार बने हुए, परमेश्वरीय स्पर्श वाली वाणी से संसारी जीवों के पाप-ताप हरने वाले, सुख-शांति और आनंद में सराबोर करने वाले संत का प्रसाद बाँटने में साझीदार जो भी हो रहे हैं उन सब पाठकों को, साधकों को, भक्तों को, नामी-अनामी सब सज्जनों को भगवान अधिक उत्साह दें... दीर्घायु करें।

साहस, सच्चाई और स्नेह से इस दैवी कार्य को, दैवी प्रसाद को खूब खूब बाँटें और पायें।

'ऋषि प्रसाद' के तीसरे वर्ष में प्रवेश होने पर सब भक्तों एवं साधकों के चरणों में शत शत प्रणाम...

विनीत,

श्री योग वेदान्त सेवा समिति।

भगवान का बनकर देख जरा

दुनियाँ का बनकर देख चुका,
भगवान का बनकर देख जरा।
प्रभु-भक्ति में कितनी खुशियाँ हैं,
इस राह पर चलकर देख जरा॥
दुनियाँ के प्यार में फँसकर के,
कई जन्म यूं ही बरबाद किये।
अब शरण में सतगुरु की आकर के,
तू नाम सुमरकर देख जरा॥
प्रभु-प्रेम में कितनी मस्ती है,
ये पूछो प्रेम दीवानों से।
श्रद्धा और प्रेम का प्याला भी,
इक बार तू पीकर देख जरा॥
भक्ति की राह जो चलते हैं,
वे जग में अमर हो जाते हैं।
है प्यार सच्चा एक सतगुरु का,
मोह नींद से जगकर देख जरा॥
प्रभु चरण कमल से प्रीति कर,
पायेगा सच्चा तू सुख सदा।
सतगुरु की आज्ञा में चलकर,
मन मति को छोड़ के देख जरा॥

*

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं
ज्ञातादभयं पुरो यः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥

'हम मित्र से अभय हों, शत्रु से भी अभय हों। रात्रि और दिवस अभयप्रद हों। समस्त दिशाएँ मेरी मित्र हों।'

[अथर्ववेद १९. १५. ६]

उपनिषदों में से गोला बारूद की तरह कोई शब्द प्रकट होता हो तो वह है 'निर्भयता'। निर्भयता सब सफलताओं की कुँजी है। जिसके पास निर्भयता रूपी शस्त्र है उसके आगे और सब शस्त्र कुंठित हो जाते हैं।

अभयं वै जनक प्राप्तोऽसि।

'हे जनक! तू निर्भयता को, अभय अवस्था को प्राप्त हुआ है।'

जिसको अभय अवस्था प्राप्त हुई है उसे किसका भय? उस ब्रह्मवेत्ता की शांति भंग करने का सामर्थ्य भला किसमें है? वह अनंत ब्रह्माडों में समाया हुआ, विश्व के कण कण में अपनी अभिन्न सत्ता का अनुभव करता है। विश्व में कोई उसका अमंगल नहीं कर सकता। उसके लिए रात भी वैसी ही सुहावनी है, जैसा दिन। उसे मृत्यु भी वैसी ही प्यारी है, जैसा जीवन। शत्रु भी उसे उतना ही प्यारा है, जितना मित्र। क्योंकि वह इन द्वन्द्वों की गहराई में प्रतिष्ठित आत्मा से एकत्व स्थापित कर चुका है। वैसा ज्ञानवान जिसको स्पर्श कर लेता है, जिसे अपनी मस्तीभरी निगाहों से देख भर लेता है, जिसे अपने कृपाकटाक्ष से पावन कर देता है वह भी अभय अवस्था का पात्र हो जाता है। उसके भी शत्रु-मित्र, दिन-रात, ज्ञात-अज्ञात सब द्वन्द्व मिट जाते हैं।

हे परमात्मा! हमें उन ज्ञानवानों की अभय दृष्टि का दान दो। ज्ञानवानों के उस निर्भय, निश्चल हृदय से हम अपना हृदय मिलायें। उनकी दृष्टि से हम अपनी दृष्टि मिलायें। हम मित्र और शत्रु दोनों में अभय हों। मित्र हमारी खुशामद कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। शत्रु हमारा तेजोद्वेष करते हैं। हमें तो उनसे उपराम होकर स्वरूप शांति की लहरों में निमग्न होने देना, प्रभु!

जिसको हम जानते हैं उस ज्ञान का अहंकार और जिसे हम नहीं जानते उस अज्ञात की जिज्ञासा, दीनता हमें मोह में आबद्ध कर देती है। हम तो जाने हुए और जानने में आनेवाले सब से उपरामता को, अभय को प्राप्त हों।

रात्रि और दिन हमारे लिए अभयप्रद हों। समस्त दिशाएँ भी हमारे लिए अभय प्रदायक हों। दसों दिशाओं में कोई हमारा शत्रु न हो। हमें अजातशत्रुत्व में स्थिति करानेवाला ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो, ब्रह्मभाव प्राप्त हो।

*

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

व्यास पूर्णिमा

'परमात्मा में जिसकी परम भक्ति होती है, जैसी भक्ति परमात्मा में होती है वैसी ही अपने गुरु में भी होती है उस महात्मा परुष के हृदय में ही यह रहस्य, गुरुतत्त्व का अर्थ प्रकाशित होता है।'

(श्वेताश्वतर उपनिषद : ६. २३)

भगवान में जिसकी दृढ़ प्रीति है और जैसी भगवान में प्रीति है ऐसी ही प्रीति भगवत्प्राप्त जीवित ब्रह्मवेत्ता महापुरुष में है, उनके वचनों में स्वीकृति है, उनके आज्ञापालन में तत्परता है उसके हृदय में ही तत्त्व का प्रकाश होता है, साक्षात्कार होता है, ईश्वर की प्राप्ति होती है।

विवेकानन्द बार-बार कहा करते थे : "पहले तुम भगवान के राज्य में प्रवेश कर लो, बाकी का अपने आप तुम्हें प्राप्त हो जायेगा। भाइयों ! अपनी पूरी शक्ति लगाओ। पूरा जीवन दाव पर लगाकर भी भगवद् राज्य में पहुँच जाओगे तो फिर तुम्हारे लिए कोई सिद्धि असाध्य नहीं रहेगी, कुछ अप्राप्य नहीं रहेगा, दुर्लभ नहीं रहेगा। उसके सिवाय सिर पटक-पटककर कुछ भी बहुमूल्य पदार्थ या ध्येय पा लिया फिर भी अंत में रोते ही रहोगे। यहाँ से जाओगे तब पछताते ही जाओगे। हाथ कुछ भी नहीं लगेगा। इसलिए अपनी बुद्धि को ठीक तत्त्व की पहचान में लगाओ।"

जिस देश में गुरु-शिष्य परंपरा हो, जिस देश में ऐसे ब्रह्मवेत्ताओं का आदर होता हो जो अपने को परहित में खपा देते हैं, अपनी 'मैं' को परमेश्वर में मिला देते हैं उस देश में ऐसे पुरुष अगर सौ भी हों तो उस देश को फिर कोई परवा नहीं होती, कोई लाचारी नहीं रहती, कोई परेशानी नहीं रहती।

जिस देश में गुरु-शिष्य परंपरा हो, जिस देश में ऐसे ब्रह्मवेत्ताओं का आदर होता हो जो अपने को परहित में खपा देते हैं, अपनी 'मैं' को परमेश्वर में मिला देते हैं उस देश में ऐसे पुरुष अगर सौ भी हों तो उस देश कोई फिर कोई परवाह नहीं होती, कोई लाचारी नहीं रहती, कोई परेशानी नहीं रहती।

जहाँ देखो वहाँ स्थूल शरीर का भोग, स्थूल 'मैं' का पोषण और नश्वर पदार्थों के पीछे अन्धी दौड़ लगी है। शाश्वत आत्मा का घात करके नश्वर शरीर के पोषण के पीछे ही सारी जिंदगी, अक्ल और होशियारी लगायी जा रही है। पश्चात्य देशों का यह कचरा अभी भारत में आया है। उन देशों में 'अधिक से अधिक सुविधा-संपन्न कैसे हो सकते हैं, कितनी ज्यादा चीजें प्राप्त कर सकते हैं' यही लक्ष्य था। वहाँ सुविधा और धन से संपन्न व्यक्ति को बड़ा व्यक्ति मानते थे जबकि भारत में आदमी

कम-से-कम कितनी चीजों में गुजारा कर सकता है, कम-से-कम किन चीजों से उसका जीवन चल सकता है' यह सोचा जाता था। यहाँ ज्ञान संयुक्त त्यागमय दृष्टि रही।

वे ही देश, व्यक्ति और धर्म टिके हैं, शाश्वत प्रतिष्ठा को पाये हैं, जो त्याग पर आधारित हैं।

वर्तमान में भले कोई वैभववान हो, ऊँचे आसन, सिंहासन पर हो, लेकिन वे धर्म, वे व्यक्ति और वे राज्य लम्बा समय नहीं टिकेंगे, अगर उनका आधार त्याग और सत्य पर प्रतिष्ठित नहीं है तो। जिनकी गहराई में सत्यनिष्ठा है, त्याग है और कम-से-कम भौतिक सुविधाओं का उपयोग करके ज्यादा से ज्यादा अंतरात्मा का सुख लेते हैं उन्हीं के विचारों ने समाज पर प्रभाव डाला है। उन्हीं के विचारों ने मानव के जीवन का उत्थान किया है। जो अधिक भोगी हैं, सुविधा-सामग्री के अधिक गुलाम हैं वे भले कुछ समय के लिए हर्षित दिखें, सुखी दिखें, लेकिन आत्मसुख से वे लोग वंचित रह जाते हैं। शुकदेवजी, वामदेवजी, जड़भरतजी जैसे त्यागी महापुरुष बाहर से भले ऐसे ही अकिंचन दिखते हों, झोंपड़े में रहते हुए, कौपीन धारण किये हुए दिखते हों, लेकिन आत्मराज्य में उन्होंने प्रवेश किया है। वे स्वयं तो सुखी हैं, उनके अस्तित्व मात्र से वातावरण में सुख, शान्ति, आनन्द एवं रोनक छा जाती है।

जिनकी गहराई में सत्यनिष्ठा है, त्याग है और कम-से-कम भौतिक सुविधाओं का उपयोग करके ज्यादा से ज्यादा अंतरात्मा का सुख लेते हैं उन्हीं के विचारों ने समाज पर प्रभाव डाला है। उन्हीं के विचारों ने मानव के जीवन का उत्थान किया है।

उन ब्रह्मवेत्ताओं के लिए, जीवन्मुक्तों के लिए श्वेताश्वतर उपनिषद कहती है :

यस्य देवे परा भक्तिः
यथा देवे तथा गुरौ।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा को व्यासपूर्णिमा भी कहते हैं।

व्यास किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। व्यास का अर्थ है जो व्यवस्था करे। भगवान कृष्ण द्वैपायन ने संहिताओं के अर्थ को व्यवस्थित करके लोकभोग्य बनाया, लोक-उत्थान का कार्य किया, अठारह पुराण एवं अठारह उपपुराण बनाये। व्यासजी ने ऋषियों के बिखरे अनुभवों को समाजभोग्य बनाकर व्यवस्थित किये। व्यासजी की आखिरी कृति है श्रीमद् भागवत्।

विश्व के सुप्रसिद्ध दार्शनिक आर्ष ग्रंथ ब्रह्मसूत्र का लेखन व्यासपूर्णिमा के दिन प्रारंभ हुआ था। व्यासपूर्णिमा के दिन से संन्यासी लोग चातुर्मास, एकांतवास करते हैं अथवा एक जगह स्थिर होकर ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते हैं और अपने जीवन में भी बिखरी हुई वृत्तियों को व्यवस्थित करते हैं।

अन्य पूनम तो तुम मनाते हो लेकिन गुरुपूनम तुम्हें मनाती है। वह कहती है कि भैया! अब इधर आ जाओ। तुम बहुत भटके, बहुत अटके और बहुत लटके। जहाँ गये वहाँ धोखा ही धोखा खाया। अपने को ही सताया। अब जरा अपनी आत्मा में आराम पाओ।

अन्य पूनम तो तुम मनाते हो लेकिन गुरुपूनम तुम्हें मनाती है। वह कहती है कि भैया! अब इधर आ जाओ। तुम बहुत भटके, बहुत अटके और बहुत लटके। जहाँ गये वहाँ धोखा ही धोखा खाया। अपने को ही सताया। अब जरा अपनी आत्मा में आराम पाओ।

यह पूनम गुरुपूनम है, बड़ी पूनम है। बच्चों की तरह अल्प सुख में, अल्प भोग में ही संतुष्ट नहीं होना है। गधा केवल चन्दन के भार को वहन करता है, चंदन के गुण और खुश्बू का उसे पता नहीं। ऐसे ही जिनकी देह में ही आसक्ति है वे केवल संसार का भार वहन करते हैं। मगर जिनकी बुद्धि, प्रज्ञा, आत्मपरायण हुई है वे उस आत्मा रूपी चंदन की खुश्बू का मजा लेते हैं।

लाख उपाय कर ले प्यारे कदे न मिलसि यार।
बेखुद हो जा देख तमाशा आपे खुद दिलदार॥

तुम्हें खुद दिलदार बनाने का संदेश देनेवाली जो

पूनम है उस पूनम को कहते हैं गुरुपूनम।

ऐसे गुरु जिस देश में रहते हैं, ऐसे गुरुओं को झेलनेवाले साधक जिस देश में रहते हैं उसी देश में आध्यात्मिक पुरुष अवतरित होते हैं।

'व्यासोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।'

सारा जगत व्यास का उच्छिष्ट है। आध्यात्मिक संदेश, आध्यात्मिक ज्ञान व्यासजी के द्वारा प्रसारित हुए। बाद में मजहब बने, मत बने, अपना सिक्का लगा दिया। ठीक है, मगर है सारा का सारा व्यासजी का खजाना।

भगवान वेदव्यास ने नारदजी की सलाह से श्रीमद्भागवत की रचना की। अभी भी हम देखते हैं कि समाज में जो कोई भागवत की कथा करता है उसे हम व्यास कहते हैं। व्यास माने व्यवस्था करनेवाला।

एक व्यवस्था होती है रोटी-दाल की, इस शरीर के सुख-सुविधा की। जैसे आश्रम का व्यवस्थापक और किसी फैक्ट्री का व्यवस्थापक होता है ऐसे ही तुम्हारी बिखरी हुई तमाम चेतना, तुम्हारी बिखरी हुई मन की तमाम वृत्तियों की व्यवस्था करके जहाँ से वृत्तियाँ उठती हैं, उसी आत्मस्वरूप की तरफ लगाने की जो चेष्टा करते हैं उन्हें व्यास कहा जाता है।

ऐसे भगवान व्यास की समृति आज के दिन अनिवार्य है। उस दयालु पुरुष ने व्यक्ति का उत्थान तो चाहा, समाज का उत्थान भी उतना ही चाहा। अपने देश के व्यक्तियों का तो भला चाहा ही, समाज का भी भला चाहा, मानवमात्र का भी कल्याण चाहा।

व्यासजी आठ घंटे एक आसन पर बैठ जाते। जब समाधि से जागते, भूख लगती तब बद्रिकाश्रम के इलाके में से कुछ बेर खा लेते। इससे उनका नाम पड़ा बादरायण।

जो व्यवस्था करें उन्हें व्यास कहा जाता है और जो अनुभव करायें उन्हें गुरु कहा जाता है।

जो व्यवस्था करें उन्हें व्यास कहा जाता है और जो अनुभव करायें उन्हें गुरु कहा जाता है।

आचार्यवान पुरुषो वेद।

भगवान वेदव्यास में गुरुतत्त्व भी उतना ही संपूर्ण छलका था। वेदव्यासजी ने संजय को दिव्य दृष्टि दी थी। भगवान कृष्ण अर्जुन को युद्ध के मैदान में उपदेश दे रहे थे और संजय को वह उपदेश ज्यों का त्यों धृतराष्ट्र के महल में सुनाई-दिखाई पड़ रहा था। अर्जुन को वहाँ ज्ञान हुआ और संजय को यहाँ अनुभव हुआ।

भगवान वेदव्यासजी चिरंजीवी हैं। उन्होंने मंडनमिश्र के घर प्रकट होकर आद्य शंकराचार्य को दर्शन दिये थे। ऐसे ब्रह्मवेत्ता सचमुच में कभी मरते नहीं। जिनको तत्त्व का बोध हो गया वे कभी मरते नहीं। उनका शरीर चाहे दिखे या न दिखे। तत्त्व कभी मरता नहीं और शरीर कभी टिकता नहीं। जो नहीं टिकता उसके पीछे पूरा जीवन खर्च देना यह माया का आकर्षण है, अज्ञान है। जो नहीं मिटता उसके लिए समय नहीं निकालना यह बेवकूफी दूर करने का जिन्होंने दिनरात तनतोड़ यत्न किया ऐसे गुरुओं को समझने का दिन, गुरुओं के दिल को अपने दिल में आमंत्रित करने का दिन व्यासपूर्णिमा का दिन है।

आज के दिन एक खतरा भी हो सकता है। सच्चे गुरुओं के प्रति समाज में जो श्रद्धा है उस श्रद्धा का फायदा उठाकर ऐसे वैसे लोग गुरु बन बैठते हैं और अपनी क्षुद्र इच्छाएँ पोसने लग जाते हैं, मान-बड़ाई, रुपया-पैसा इकट्ठा करने लग जाते हैं। ऐसे लोग तो... कन्या मन्या कुर्र्र्र... तुम हमारे चेले हम तुम्हारे गुर्र्र्र... दक्षिणा धर्र्र्र... तू चाहे तर्र्र्र... चाहे मर्र्र्र...

आज के दिन एक खतरा भी हो सकता है। सच्चे गुरुओं के प्रति समाज में जो श्रद्धा है उस श्रद्धा का फायदा उठाकर ऐसे वैसे लोग गुरु बन बैठते हैं और अपनी क्षुद्र इच्छाएँ पोसने लग जाते हैं, मान-बड़ाई, रुपया-पैसा इकट्ठा करने लग जाते हैं।

सच्चे गुरु तो देना ही देना पसंद करते हैं और लेते हैं तो भी देने के लिए ही लेते हैं। लेते हुए दिखते हैं मगर वे ली हुई चीजें फिर घुमा फिरा कर उसी समाज के हित में, समाज के कार्य में लगा देते हैं।

ऐसे महापुरुषों को अपनी अल्प मति से मापना साधक स्वीकार नहीं करता। उनका बाह्य व्यवहार मस्तिष्क में नहीं तोलता। उनके अंतर के प्रेम को झेलता है। अंतर के चक्षुओं को निहारता है और उनके साथ अंतरात्मा से सम्बन्ध जोड़ लेता है।

जो दीक्षित होते हैं उन्हें पता है कि संसार के सारे वैज्ञानिक, सत्ताधीश, सारे धनवान लोग मिलकर एक आदमी को उतना सुख नहीं दे सकते जो सद्‌गुरु की निगाह मात्र से सत्‌शिष्य पा सकता है।

जो दीक्षित होते हैं उन्हें पता है कि संसार के सारे वैज्ञानिक, सत्ताधीश, सारे धनवान लोग मिलकर एक आदमी को उतना सुख नहीं दे सकते जो सद्‌गुरु की निगाह मात्र से सत्‌शिष्य पा सकता है। वे सज्जन लोग जो सत्ताधीश हैं, वैज्ञानिक हैं वे सुविधाएँ दे सकते हैं। गुरु शायद वे चीजें न भी दें। सुविधाएँ इन्द्रियजन्य सुख देती हैं। कुत्ते को भी सीरा खाकर मजा आता है। वह इन्द्रियजन्य सुख है। लेकिन बुद्धि में ज्ञान भरने पर जो अनुभूति होती है। वह कुछ निराली होती है। सीरा खाने का सुख तो विषय-सुख है। विषय-सुखमें तो पशुओं को भी मजा आता है। साहब को सोफा पर बैठने में जो मजा आता है, सूवर को नाली में वही मजा आयेगा। एक मिस्टर को मिसिस से जो मजा आता है वह कुत्ते को कुतिया से मजा आता है। मगर अंत में देखो तो दोनों के दिवाले निकल जाते हैं।

इन्द्रियगत सुख देना या उसमें सहयोग करना यह कोई खास सेवा नहीं है। सच्ची सेवा तो उन महर्षि वेदव्यास ने की, उन सत्‌गुरुओं ने की, उन ब्रह्मवेत्ताओं ने की जिन्होंने जीव को जन्ममृत्यु की झंझट से छुड़ाया... जीव को स्वतंत्र सुख का दान किया... दिल में आराम दिया... घर में घर दिखा दिया... दिल में ही दिलबर का दिदार करने का रास्ता बता दिया। यह सच्ची सेवा करनेवाले जो भी ब्रह्मवेत्ता हों, चाहे प्रसिद्ध हों चाहे अप्रसिद्ध, नामी हों चाहे अनामी, उन सब ब्रह्मवेत्ताओं को हम खुल्ले हृदय से हजार हजार बार आमंत्रित करते हैं और प्रणाम करते हैं।

इन्द्रियगत सुख देना या उसमें सहयोग करना यह कोई खास सेवा नहीं है। सच्ची सेवा तो उन महर्षि वेदव्यास ने की, उन सत्‌गुरुओं ने की, उन ब्रह्मवेत्ताओं ने की जिन्होंने जीव को जन्म-मृत्यु की झंझट से छुड़ाया... जीव को स्वतंत्र सुख का दान किया... दिल में आराम दिया... घर में घर दिखा दिया... दिल में ही दिलबर का दिदार करने का रास्ता बता दिया।

हे महापुरुषों! विश्व में आपकी कृपा जल्दी से पुनः पुनः बरसे। विश्व अशांति की आग में जल रहा है। उसे कोई कायदा या कोई सरकार नहीं बचा सकती। हे आत्मज्ञानी गुरुओं! हे ब्रह्मवेत्ताओं! हे निर्दोष नारायण स्वरूपों! हम आपकी कृपा के ही आकांक्षी हैं। दूसरा कोई चारा नहीं। अब न सत्ता से विश्व की अशांति दूर होगी, न अक्ल होशियारी से, न शांतिदूत भेजने से। केवल आप लोगों की अहेतुकी कृपा बरसे...

उनकी कृपा तो बरस ही रही है। देखना यह है कि हम दिल कितना खुला रखते हैं, हम उत्सुकता कितनी रखते हैं। जैसे गधा चंदन का भार तो ढोता है मगर उसकी खुश्बू से वंचित रहता है। ऐसे ही हम मनुष्यता का भार तो ढोते हैं लेकिन मनुष्यता का जो सुख मिलना चाहिए उससे हम वंचित रह जाते हैं।

आदमी जितना छोटा होगा उतना इन्द्रियगत सुख में उसे ज्यादा सुख प्रतीत होगा। आदमी जितना बुद्धिमान होगा उतना बाह्य सुख उसे तुच्छ लगेगा और अंदर का सुख उसे बड़ा लगेगा। बच्चा जितना अल्प मति का है उतना बिस्कीट चोकलेट उसे महत्त्वपूर्ण लगेगा। सोने के आभूषण, हीरे-जवाहरात चखकर छोड़ देगा। बच्चा जितना बुद्धिमान होता जाएगा उतना इन चीजों को स्वीकार करेगा और चोकलेट बिस्कीट आदि

के चक्कर में नहीं पड़ेगा। ऐसा ही मनुष्य जाति का हाल है। आदमी जितना अल्पमति है उतना उतना क्षणिक सुख में, आवेग में, आवेश में और भोग में रम जाता है। जितना जितना बुद्धिमान है उतना उतना उससे ऊपर उठता है। तुम जितने तुच्छ भोग भोगते हो उतनी तुम्हारी प्राणशक्ति दुर्बल होती है।

भगवान वेदव्यास ने और गुरुओं ने हमारी दुर्दशा जानी है इसलिए उनका हृदय पिघलता है। वे दयालु पुरुष आत्म-सुख की ब्रह्म-सुख की ऊँचाई छोड़कर समाज में आये हैं।

कोई कोई विरले होते हैं जो उनको पहचानते हैं, उनसे लाभ लेते हैं। जिन देशों में ऐसे ब्रह्मवेत्ता गुरु हुए और उनको झेलनेवाले साधक हुए वे देश उन्नत बने हैं। ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों की शक्ति साधारण मनुष्य को रूपांतरित करके भक्त को साधक बना देती है और समय पाकर वही साधक सिद्ध हो जाता है, जन्म-मरण से पार हो जाता है।

दुनिया के सब मित्र मिलकर, सब साधन मिलकर, सब सामग्रियाँ मिलकर, सब धन-संपदा मिलकर भी मनुष्य को जन्म-मरण के चक्कर से नहीं छुड़ा सकते। गुरुओं का सान्निध्य और गुरुओं की दीक्षा बेड़ा पार करने का सामर्थ्य रखती है।

धन्यभागी हैं वे लोग जिनमें वेदव्यासजी जैसे आत्मसाक्षात्कारी पुरुषों का प्रसाद पाने की और बाँटने की तत्परता है।

*

(पेज ४६ से जारी...)

डॉक्टर यह बात समझ नहीं सके कि बेहोश आदमी ने कैसे अपना ऑपरेशन देखा। उन्हों ने कहा कि :

"आप को विलक्षण अनुभूति कैसे हुई?" तब मैंने गले में पहना पू. बापू का चाँदी का पेंडल दिखाकर कहा कि यह मेरे मस्त मौला गुरुदेव की अद्भुत चमत्कारिक कृपा का फल है। वेदव्यासजी ने संजय को दिव्य दृष्टि दी और उसने महाभारत का युद्ध मीलों दूर बैठकर देखा। उससे भी विशेष दिव्य दृष्टि मेरे गुरुदेव ने दी जो मैंने बेहोशी में ही होश पाकर अपना ही ऑपरेशन देखा। फिर तो डॉक्टर, उनकी धर्मपत्नी और दूसरे लोग भी मुझ बापू के कृपापात्र को मिलने आने लगे।

वेदव्यासजी ने संजय को दिव्य दृष्टि दी और उसने महाभारत का युद्ध मीलों दूर बैठकर देखा। उससे भी विशेष दिव्य दृष्टि मेरे गुरुदेव ने दी जो मैंने बेहोशी में ही होश पाकर अपना ही ऑपरेशन देखा।

गुरुकृपा और गुरुमंत्र ने मेरी नई जिंदगी बनायी। भयानक दुर्घटना से भी मुझे मुक्त किया। मैं नित्य आसारामायण का पाठ करता हूँ तब ये पंक्तियाँ मेरे लिए जानदार हो जाती हैं :

सबको निर्भय योग सिखाएं,
सबका आत्मोत्थान करायें।
सचमुच गुरु हैं दीनदयाल,
सहज ही कर देते हैं निहाल॥

इनके पाठ पर मेरी आँखें भर जाती हैं। पू. बापू से मेरी यही प्रार्थना है कि ऐसे घोर कलिकाल में आप हमारे लिए वटवृक्ष हो प्रभु! आप हमें अपनी छाया का दान देना और सबकी उन्नति करना। हे जगद्गुरु! आप के श्रीचरणों में कोटि कोटि साष्टांग दंडवत् प्रणाम...!

- धर्मनारायण कल्याणसिंहजी मौर्य
आमेट, जि. राजसमंद (राज.)

*

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद सद्गुरुदेव संत श्री आसारामजी महाराज के प्रत्यक्ष या परोक्ष सान्निध्य में जिन साधक, भक्त भाई-बहनों को कुछ विशेष आध्यात्मिक अनुभव हुए हों वे भाग्यवंत भाई-बहन अपना वह अनुभव सचोट, सारगर्भित एवं मर्यादित शब्दों में, स्पष्ट हस्ताक्षरों में लिखकर 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय में भेजें। यथा योग्य सुविधा होने पर ये अनुभव 'ऋषि प्रसाद' में प्रकाशित किये जाएंगे।

अखबारों के झरोखे से....

उज्जैन के सिंहस्थ कुंभ मेले में हजारों-लाखों की तादाद में शरीक हुई भोली-भाली श्रद्धालु जनता को पू. बापू ने एक अनूठे हरिरस में सराबोर कर दिया। आधुनिक विज्ञान एवं भौतिकवाद के विरानों में लड़खड़ाती भक्ति एवं आस्था के कदमों को हिमालय की - सी दृढ़ता प्रदान की। श्रद्धा और विश्वास के बूझते चिरागों को आस्तिकता से दमकती नवज्योति प्रदान की। सभी मुख्य अखबारों एवं पत्रिकाओं ने एकमत हो मुक्त कण्ठ से पू. बापू के इस दैवी कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

....तो आईये, अखबारों के झरोखे से अवलोकन करें पूज्यश्री के इन अलौकिक कार्यों का....

दैनिकभास्कर

६ अप्रैल १९९२

संत श्री आसारामजी का अलौकिक आश्रम

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

सिंहस्थ के दत्त अखाड़ा क्षेत्र में बड़नगर नाके से चिन्तामणि जाने वाली सड़क के दाहिनी ओर कुण्डलिनी योग के अनुभवनिष्ठ, समर्थ सद्गुरु, वेदान्तनिष्ठ संत श्री आसारामजी महाराज, अहमदाबाद का ८ लाख स्क्वैयर फीट में अस्थायी, आकर्षक, अद्भुत एवं अलौकिक भव्य आश्रम भारत के दूरदराज के इलाकों से आए स्वयंसेवकों द्वारा अहमदाबाद के वास्तुविद् द्वारा तैयार किए नक्शानुसार युद्ध स्तर पर बसाया जा रहा है

इस आश्रम की कई प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस आश्रम की योजना को अक्टूबर '९१ में ही मूर्तरूप देने की कौशिश आरंभ कर दी गई थी। स्वामी जी के शिष्य न केवल भारत में वरन् विश्वभर में फैले हुए हैं। इस अस्थायी आश्रम को बनाने की बात आई तो ५००० साधकों ने स्वयं आकर निःशुल्क सेवा देने की इच्छा व्यक्त की, लेकिन मात्र २५०० को ही यहाँ आने की स्वीकृति दी गई है। इन साधकों में डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कलाकार, उद्योगपति, व्यापारी, वास्तुविद्, इलेक्ट्रीशियन एवं ड्रायवर सहित सभी व्यवसाय शामिल हैं। ये साधक हर जाति, धर्म एवं पंथ के हैं। हिन्दू, मुस्लिम ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन एवं अन्य धर्मावलम्बी आपसी भाईचारे से यहाँ पर कार्यरत हैं। यहाँ पर जो तैयारी चल रही थी उसमें कई साधक न केवल शारीरिक श्रम कर रहे हैं वरन् अपने भोजन का व्यय भी स्वयं उठा रहे हैं। सांस्कृतिक एकता व गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना का जीवन्त उदाहरण सिंहस्थावधि में इस कैम्प में देखा जा सकता है। आश्रमावधि में विश्वभर से ८ - १०

कुंभ, जिसकी स्थापना आसारामजी बापू करेंगे।

लाख साधकों के आने की संभावना है। आश्रम में १० हजार व्यक्तियों के रहने - ठहरने की नि:शुल्क व्यवस्था की जा रही है। ज्यादा साधक आने पर इसे बढ़ाया भी जा सकता है। इस पंडाल को चमचमाती चद्दरों से घेर लिया है। दरवाजे पर चौबीस घंटे दरबान तैनात रहता है। २५ हजार लोगों के बैठने का प्रवचन सभागार, बच्चों का खेल मैदान, कैन्टीन, वीडियो हॉल, क्लॉक रूम, आफिस, चलित झाँकियाँ, स्वागत कक्ष, महिलाओं - पुरुषों का आवासगृह, भोजन कक्ष, स्टोर, खेल के लिए सुन्दर उद्यान आदि की व्यवस्था के तम्बू योजनाबद्ध तरीके से लगाए जा रहे हैं। सभी स्थलों का आकर्षक नामकरण भी किया गया है। पुरुषों का आवास तम्बुओं के नाम देश के प्रसिद्ध पर्वत पर रखे गए हैं - हिमालय, सतपुड़ा, विंध्याचल एवं गिरनार आदि। महिलाओं के आवास तम्बुओं के नाम देश की प्रसिद्ध नदियों पर रखे गए हैं - क्षिप्रा, नर्मदा, कावेरी, सरस्वती, गंगा, जमना, गोदावरी एवं ब्रह्मपुत्रा आदि। साधु - संतों के तम्बुओं के नाम प्रसिद्ध ऋषि-महर्षि के नाम पर रखे गए हैं तुलसीदास, कबीरदास, तुकाराम, वाल्मीकि, कालिदास, एकनाथ, गुरुनानक एवं भर्तृहरि आदि। आश्रम में पीतल का एक विशाल कुंभ कलश लगेगा एवं एक कृत्रिम जल-प्रपात भी निर्मित किया जा रहा है।
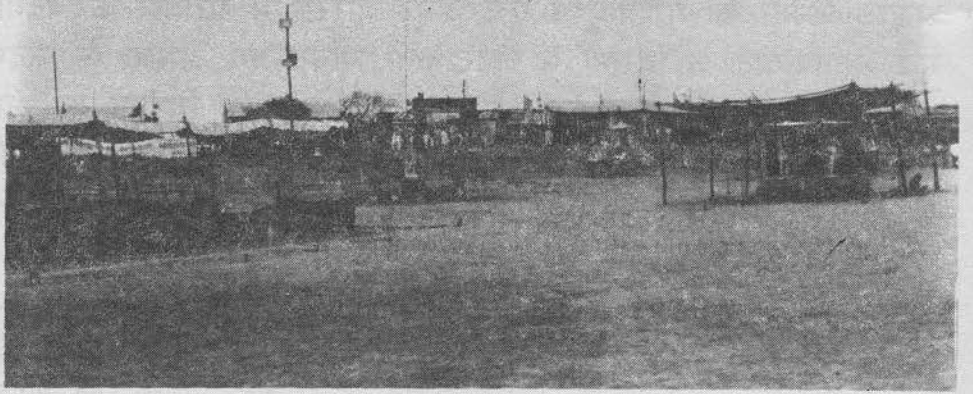
'आसारामजी नगर' का निर्माण कार्य जारी है.....

आश्रम स्थल पर जो पाँच झाँकियाँ लगाई जाएंगी उसमें मानव जन्म से मृत्युपर्यन्त मानव कर्म - धर्म - नीति - दर्शन दिखाई देगा। इसके साथ दिव्य संतों - विभूतियों के दर्शन चित्र भी प्रदर्शित किए जाएंगे। साथ ही दुर्व्यसनों से ग्रसित नशेचलियों को मुक्त कराने के प्रयासों पर भी एक प्रदर्शनी लगेगी, क्योंकि पूज्य स्वामीजी का लक्ष्य है दुर्व्यसनों से ग्रस्त मानव को मुक्त कराकर ईश्वरीय रूप से साक्षात्कार कराना। उत्तर गुजरात का एक ग्राम खेरालू (मेहसाना) में अधिकांश निवासी दुर्व्यसनों से ग्रसित एवं डकैत थे। वहाँ के १० प्रतिशत व्यक्तियों को स्वामीजी की प्रेरणा से व्यसनमुक्त करा दिया है। ऐसे कई प्रसंग हैं। इस प्रकार साधकों को ज्ञान देने वाले भारत में १७ आश्रम हैं। म. प्र. में ४, गुजरात में ५, राजस्थान में ४, वृंदावन, ऋषिकेश दिल्ली एवं उल्लासनगर में एक - एक आश्रम हैं। उज्जैन में दो साधकों द्वारा अलग - अलग जगह आश्रम हेतु जमीन दान दी गई है। आगरा रोड़ पर आश्रम बन रहा है। २३ अप्रैल ९२ अनायास सुखद एवं आनंदित दिवस रहेगा। इस आश्रम के लिए स्वामी आसारामजी की ५० वीं सालगिरह स्वर्ण जयंती महोत्सव के रूप में मनाई जाएगी। इस दिन एक विशाल शोभायात्रा निकलेगी, जिसमें आश्रम से पूर्ण शाही सम्मान के साथ हाथी, घोड़े, डंके, निशान, बंदूकची, नगाड़े, ड्रम, बिगुल, बैण्ड, भजन मंडली, झाँकियाँ आदि शामिल होंगे। स्वामीजी के लिए एक प्राचीन स्वरूप का सुन्दर अद्भुत एवं विशेष रथ बनाया गया है, जिसमें स्वामीजी बैठेंगे। यहाँ उपस्थित साधकों के लिए महापर्व होगा। इस आश्रम में साधक योग, भक्ति एवं ज्ञान प्राप्ति करेंगे। शिविर की दिनचर्या पूर्णत: नियंत्रित एवं अनुशासित रहती है जिसका सभी को पालन करना पड़ता है। इस आश्रम की विशाल भव्य शोभायात्रा दिनांक १६ अप्रैल को संख्याराजे धर्मशाला से आरंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई आश्रम स्थल तक आएगी।

आत्मज्ञान प्राप्त कराकर मुक्ति

साधना की शिक्षा देने वाले स्वामीजी के दर्शन करके लाखों श्रद्धालु सिंहस्थावधि में यहाँ आएंगे। यह समस्त जानकारी ईश्वरभाई नायक ने दी जो शिविर संयोजन का दायित्व संभाले हुए हैं। २२ वर्षों तक कनाड़ा में वित्तप्रबंधक एवं अध्यापन कार्य छोड़कर विगत ढाई वर्षों से स्वामीजी की शरण में पत्नी - बच्चों सहित रह रहे हैं।

इस आश्रम में आना व रहना एक अनोखी अनुभूति को जन्म देगा।

*

बड़ौदा (गुजरात) से प्रकाशित गुजराती अखबार 'संदेश' में छपे हुए गोधरा के सत्संग समारोह विषयक अहवाल का अनुवाद...

दिनांक १०-४-९२

विज्ञान के साथ तत्त्वज्ञान नहीं मिलेगा तो सबका मृत्युघंट बजेगा

(प्रतिनिधि) गोधरा, दि. ९ अप्रैल

आज विज्ञान का विकास हुआ है लेकिन विज्ञान के साथ अगर प्रेम और तत्त्वज्ञान नहीं मिलेगा तो समाज को सबसे ज्यादा सुविधाएँ देने की शक्ति रखनेवाला विज्ञान मृत्यु के किनारे पर लाकर रख देगा।

डॉ. डायमन्ड ने जीववैज्ञानिक प्रयोगों के द्वारा सिद्ध किया है कि डिस्को डान्स करने से जीवनशक्ति क्षीण होती है जबकि भारतीय प्रणालि के मुताबिक हरिनाम कीर्तन करने से, भगवन्नाम जप करने से जीवनशक्ति बढ़ती है।

जीवन्मुक्त संत श्री आसारामजी ने आज गोधरा में चार दिन के सत्संग समारोह का प्रारंभ करते हुए भारतीय संस्कृति एवं भगवद्गीता के आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए कहा कि गीता एक ऐसा अद्भुत ग्रंथ है कि जो व्यक्ति उसकी शरण में जाता है उसका सर्व प्रकार से रक्षण करती है। हताशा, पलायनवाद में उलझे हुए मोहग्रस्त को भी वह सही मार्ग दिखाती है।

गीता का आध्यात्मिक मर्म समझाते हुए संत श्री आसारामजी ने कहा कि आज मनुष्य अपने शरीर की सुविधा को ही सर्वस्व मान लेता है लेकिन वास्तव में शरीर की सुविधा ही मनुष्य
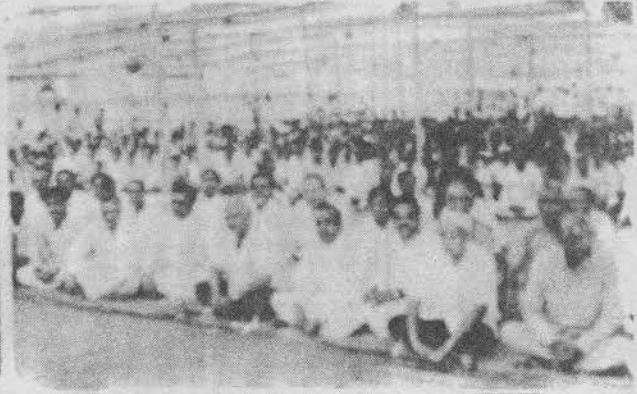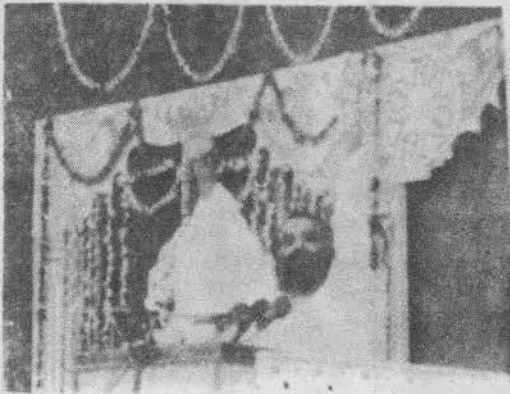
गोधरा में चार दिन तक चलनेवाले आध्यात्मिक सत्संग शिविर का प्रारंभ करते हुए संत श्री आसारामजी गीता का आध्यात्मिक मर्म समझाते हुए प्रथम तस्वीर में दिखाई दे रहे हैं। दूसरी तस्वीर में भगवद्जनों के साथ संसद सदस्य श्री शंकरसिंह वाघेला, राज्यसभा के सदस्य श्री गोपालसिंह सोलंकी, धारासभ्य श्री सी. के. राउलजी, भूतपूर्व व्यापार मंत्री श्री शान्तिलाल पटेल, अब्दुल रहेम खालपा, सैफुदीन व्होरा, जेठालाल सोनी, गोविन्दराम रावलाणी, रतिलाल चौक्सी आदि उपस्थित दिखाई दे रहे हैं। (तस्वीर : निलम स्टुडियो, गोधरा।)

का सर्वस्व नहीं है। चित्त की शान्ति, मानसिक सन्तुलन, बुद्धि में परमात्म - प्रेम की जागृति ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। मनुष्य अपने शरीर की ममता के कारण और सबको क्षुद्र मानता है और मनमाना करता है लेकिन मृत्यु आने पर तो शरीर की ममता छोड़नी ही पड़ती है। वह घड़ी आ पहुँचे उससे पहले किसी सच्चे सद्गुरु के सान्निध्य में अमर आत्मा की मुलाकात कर लेना ही मनुष्य जीवन का वास्तविक कर्त्तव्य है।

गोधरा में विराट भगवद् समुदाय को संबोधन करते हुए संत श्री

हजारों सत्संगियों के बीच संत श्री आसारामजी बापू की साफ बात

आसारामजी ने गीता का गूढार्थ समझाते हुए कहा कि मृत्यु के बाद अगर मुक्ति चाहिए तो भागवत का ज्ञान है लेकिन जीते जी परमात्मा की मुलाकात करनी हो तो भगवद् गीता का ज्ञान है। गीता में भगवान ने अर्जुन को राग - द्वेष मिटाने की विद्या दी है... मृत्यु का भय मिटाने की, अहंकार का विलय करके चित्त को परमात्मा में विलीन करने की ब्रह्मात्मैक्य विद्या भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के मैदान में दी है।

*

दैनिकभास्कर

इन्दौर बुधवार १५ अप्रैल १९९२

भारत की संस्कृति व संत पूरे विश्व में सम्माननीय : संत आसारामजी ने कहा

मनावर, (निप्र)

जिस प्रकार चीन की दीवार, अमेरिका का डालर, अरब का तेल, पेट्रोल विश्वप्रसिद्ध है उसी प्रकार भारत की संस्कृति व संत पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, क्योंकि भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों का योगदान रहा है, जो हमेशा विश्वशांति हेतु कार्य करते हैं और शांति का संदेश देते हैं।

उक्त उद्गार संत आसारामजी बापू ने विशाल धर्मसभा (सत्संग) में व्यक्त किए। संत आसारामजी ने कहा कि कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की किन्तु उससे पाँच हजार वर्ष पहले भारतीय संतों की कृपा से अर्जुन स्वर्गलोक से दिव्य अस्त्र लेकर आया था। हमारी भारतीय संस्कृति तो महान

है।

बापू ने कहा कि हरिनाम से मन, भाव, प्राणशक्ति आदि का विकास होता है और जिस जगह यह पवित्र आत्मा निवास करती है उस स्थान पर शांति बनी रहती है तथा वहाँ का वातावरण पवित्र रहता है।

योग वेदान्त सेवा समिति, मनावर द्वारा आयोजित आसारामजी बापू के सत्संग समारोह के प्रथम दिन २५ - ३० हजार धर्मालू जनता ने सत्संग का लाभ लिया। संतश्री ने विशाल जनता के संबंध में कहा कि यह सब श्रीराम नाम की महिमा है। उसीकी कृपा से भाजपा म. प्र. उत्तरप्रदेश में सत्तारूढ़ हुई है, हरि नाम की ही महिमा है।

समारोह के पूर्व विधायक गजेन्द्रसिंह राजूखेड़ी, मोहन भायल, राजस्व अनुविभागीय अधिकारी, जी. सी. गोहर, एस. डी. ओ. पी. श्री साकेत, तिलोकचन्द गंगवाल ने भी आसारामजी बापू का पुष्पमालाओं से स्वागत किया।

तेज धूप होने पर भी २५ - ३० हजार धर्मालू जनता थी। पूरा पंडाल खचाखच भरा था। याद रहे यह सत्संग समारोह का प्रथम ही दिन था। उक्त समारोह १५ अप्रैल तक होगा।

*

चौथासंसार

१७ अप्रैल १९९२

संत आसारामजी का नगर आगमन हुआ

आसारामजी बापू की पेशवाई

उज्जैन, १६ अप्रैल (निप्र)

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज का आज नगर आगमन हुआ। संत श्री आसारामजी की विशाल शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई बड़नगर रोड़ स्थित शिविर में पहुँची।

शोभायात्रा का प्रारंभ प्रात: ९ बजे संख्याराजे धर्मशाला से हुआ। संत श्री आसारामजी के नगर आगमन पर उनका स्वागत सिंहस्थ प्रभारी एवं वाणिज्यिक कर मंत्री बाबूलाल जैन एवं सांसद सत्यनारायण जटिया व विधायक पारस जैन ने किया।

शोभायात्रा में योग वेदान्त समिति सुरत, भोपाल, रतलाम, इन्दौर, उज्जैन, कोटा के भक्तगण शामिल थे। शोभायात्रा में आगे - आगे आकर्षक धुन बजाते हुए बैंड चल रहे थे। सफेद परिधान पहने डांडिया खेलती हुई व भजन गाती हुई महिलाएँ चल रहीं थीं। पीतांबर वस्त्र धारण करके कलश अपने शीश पर रखकर २१ महिलाएँ चल रहीं थीं।

भजन करते हुए एवं भक्ति में लीन युवक भी चल रहे थे। इनके पीछे त्रिशूलधारी युवक पंक्तियों में क्रमबद्ध चल रहे थे। जीप पर एक विशाल मंच बनाया गया। मंच के बीच में कमल की आकृति थी एवं सिंहासन रखा हुआ था, जिस पर छत्र लगा हुआ था।

संत श्री आसारामजी महाराज

डंडीया खेलते हुए भक्त

पालकी पर आसीन संत आसाराम बापू
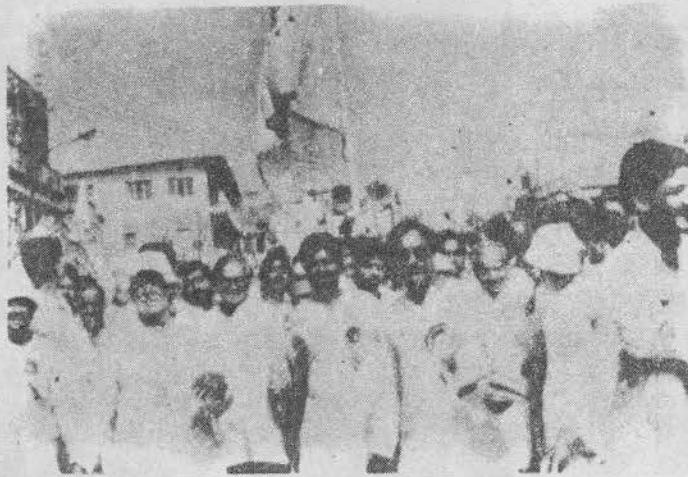
ध्वज के साथ भक्त एवं प्रभारी मंत्री श्री जैन

मधुर मधुर नाम
हरि हरि ॐ
पावन पावन नाम
हरि हरि ॐ
कलिका किनारा नाम
हरि हरि ॐ
भक्तों का दुलारा नाम
हरि हरि ॐ
साधक का सहारा नाम
हरि हरि ॐ
संतों का पियारा नाम
हरि हरि ॐ
मोक्ष का आधार नाम
हरि हरि ॐ
पुण्यों का सहारा नाम
हरि हरि ॐ
पाप का विनाशक नाम
हरि हरि ॐ

सिंहासन पर आसीन थे, उनके दोनों ओर दो साफा धारी बालक चँवर डूला रहे थे और यह रथ धीरे - धीरे आगे बढ़ रहा था। अपनी आशीर्वचन मुद्रा में बापू भक्तों का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। बापू ने भक्तों को पूरे मार्ग पर प्रसाद वितरित किया।

*

ईश्वर को पाने के लिए मन का गुलाम नहीं, स्वामी बनना पड़ता है। जैसे लोहे से लोहा काटा जाता है वैसे ही मन से मन को जीता जाता है। संयमी मन ही कार्य कर सकता है, कठिनाइयों को कुचलकर अपने शुद्ध स्वरूप परमात्मा तक पहुँच सकता है, असंयमी मन नहीं।

नईदुनिया

१७ अप्रैल १९९२

संत आसारामजी की पेशवाई का जगह-जगह स्वागत

उज्जैन १६ अप्रैल (निप्र)

परम पूज्य संत श्री आसारामजी महाराज की पेशवाई आज प्रातः ८ बजे संख्याराजे धर्मशाला से प्रारंभ हुई। ब्रह्मज्ञानी पुरुष श्री आसारामजी महाराज एक सुसज्जित वाहन में चाँदी के सिंहासन पर विराजे थे। स्थान - स्थान पर आपका धर्मालुजनों ने पुष्पवर्षा कर अभिनंदन किया।

कड़ाबीन के धमाकों के साथ प्रवेश करते हुए पेशवाई यात्रा शहर में भ्रमण कर रही थी। घोड़ों पर ध्वज पताका लिए स्वयंसेवक चल रहे थे। पेशवाई यात्रा में बड़ी संख्या में युवक - युवतियाँ चल रहे थे। श्वेत वस्त्रधारी भक्त बड़ी संख्या में पेशवाई यात्रा में सम्मिलित थे। युवतियाँ डांडिया नृत्य करते झूमते - गाते चल रही थीं। कलश आम्रपत्र लिए महिलाएँ चल रही थीं। युवकों एवं पुरुषों के समूह गुरुभक्तिगान के साथ चल रहे थे। एक बड़ी श्वेत ध्वज पताका लहराते ४-५ स्वयंसेवक चल रहे थे। श्री आसारामजी महाराज के आगे - आगे त्रिशूलधारी भक्तजनों का समूह चल रहा था। मध्यप्रदेश कांग्रेस सेवादल के अध्यक्ष श्री प्रताप मेहता के नेतृत्व में २५० से भी अधिक स्वयंसेवक पेशवाई की व्यवस्था कर रहे थे। पेशवाई यात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होती हुई बड़नगर रोड़ स्थित श्री आसारामजी नगर पहुँची।

*

नव भारत

२१ अप्रैल, १९९२

सच्चा सुख मोक्षप्राप्ति में सहायक होता है - आसारामजी

उज्जैन (निप्र)

सच्चा सुख हँसाता है, रुलाता नहीं। सच्चा सुख मोक्ष प्राप्ति में सहायक होता है। जो अपने आपका भला नहीं कर सकता वह दूसरे का भी भला नहीं कर सकता। यदि आज कुर्सी सुख देती तो सभी कुर्सी वाले सुखी होते।

उक्त विचार पूज्य संत श्री आसारामजी महाराज ने अपने प्रवचन में प्रकट किये। उन्होंने सुख की व्याख्या करते हुए कहा कि आज हमने सुख की परिभाषा को बहुत ही गलत ढंग से समझा है। खाना, पीना, रहना, घूमना, जीवन जीना सच्चा सुख नहीं है। सच्चा सुख तो है, जिसको गुरु का इशारा मिला है। सुख कई प्रकार के होते हैं, जैसे राजस सुख, तामस सुख, सात्त्विक सुख। सात्त्विक सुख सबसे विलक्षण है। यह सदाचारी लोगों के भाग्य में होता है। आत्मिक सुख सबसे हटकर है। सत्य सुख की पहचान है कि दुःख भी सुख बन जाये। इसके बाद आता है आत्यंतिक सुख, इसका अधिकारी मनुष्य ही है। गोरखनाथ ने भी इस सुख को अलग ढंग से परिभाषित किया है। उन्होंने ध्यान के विषय में लिखा है कि ध्यान के लिए गुफा, जंगलों में जाने की जरूरत नहीं है। खेलते हँसते हुए भी ध्यान हो सकता है। जब ध्यान होता है तब मन ऊर्ध्वगामी होता है। कृष्ण अपने जीवन में कभी रोये नहीं और जीसस कभी हँसे नहीं। कभी भी अपने चित्त को उदास मत करो। हम सांसारिक माया-बंधन, मोहवश प्रायः इसलिए दुखी होते हैं कि हम हर वस्तु, प्राणी, रिश्ते को अपना समझ लेते हैं लेकिन ये सब हमारे नहीं हैं। **'मैं अरु मोर तोर की माया।'** मनुष्य का केवल

चैतन्य परमात्मा के सिवा कोई दूजा नहीं है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपना हृदय बना ले जिसमें हृदयेश्वर बैठा है।

संत श्री ने आध्यात्मिक संतों के उदाहरण देते हुए कहा कि तुलसी, कबीर, अष्टावक्र - जनक संवाद, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को संदेश.... सभी ने कहा कि सच्चा सुख वही चैतन्य है। यदि मति सत्य का साक्षात्कार करती है तो ऋतम्भरा बन जाती है। आत्यंतिक सुख की तरफ मनुष्य सहजता से नहीं जाता। यदि आज कुर्सी सुख देती तो सब कुर्सी वाले सुखी होते। यदि धन सुख देता तो सब धनवान सुखी होते। यदि बल सुख देता तो सभी बलशाली सुखी होते।

सच्चा सुख गुरु का संकेत है जो ईश्वर की ओर, आत्माराम की ओर होता है। मनुष्य कार्य के संकल्प, विकल्प छोड़ दे तो उसमें सामर्थ्य आता है। भेदबुद्धि से क्रोध व अहंकार पैदा होता है। हमारी प्रवृत्ति है कि हम एक दूसरे पर क्रोध करते हैं। हम अपने पर क्रोध नहीं करते हैं। माया का अर्थ है धोखा। जो दिखता है वह नहीं है, वह है माया। आत्यन्तिक सुख बुद्धिग्राह्य है। मनुष्य मिथ्या अहंकार में जीता है। इस कारण वह पछताता है। अभिमानी सुख दुखदायी होता है। हमें हमेशा यह सोच रखना चाहिए कि तू परमात्मा का है, और परमात्मा तेरा है। यह अभिमान होना चाहिए। एक गीत के माध्यम से बापू ने मानव को सचेत करते हुए कहा कि : **मत कर रे गरव गुमान, गुलाबी रंग उड़ी जावेगो... उड़ी जावेगो रे, फीको, पड़ि जावेगो, माटी में मळी जावेगो।'** अहंकार रहित होने से तुम्हारी वृत्ति दाता जैसी निर्मल बन जायेगी। साधक को प्राणायाम करना चाहिए। गहरी श्वांस, प्रत्याश्वांस से रोगप्रतिकारक शक्ति का विकास होता है। शरीर के सूक्ष्म रंध्र खुल जाते हैं। हताशा, निराशा व रोग के कीटाणु बाहर निकलते है।

जब से त्रिकाल संध्या बंद हुई है तबसे भारतीय संस्कृति का पतन हुआ है। नारायण का जप करो। नर नारियों में जो चमक रहा है, उसका नाम नारायण है।

*

नईदुनिया

२३ अप्रैल १९९२

सज्जनों को राजनीति में आना चाहिए

संत प्रवर आसाराम जी बापू का स्पष्ट मत है कि राजनीति धर्म में प्रवेश कर रही है। धर्म का राजनीति में प्रवेश नहीं हो रहा है। यदि धर्म का राजनीति में प्रवेश हो जाए तो राजनीति चिरंजीवी हो जाएगी।

आसाराम नगर स्थित अपनी विश्राम कुटिया में बापू इस प्रतिनिधि से चर्चा कर रहे थे। बापू ने कहा कि धर्म की अपनी स्वतंत्र सत्ता है। धर्म में किसी भी प्रकार के मिश्रण की अनुमति नहीं है। राजनीति की चर्चा करते हुए आपने कहा कि राजनीति में जब अंधाधुंध अनियमितताएँ हों, भ्रष्टाचार बढ़ जाए, नियंत्रण नहीं रह जाए तो सज्जनों को, संतों को उसमें प्रवेश करना ही चाहिए। चाणक्य इसके ऐतिहासिक उदाहरण हैं। अगर सज्जन लोग ऐसे समय राजनीति में नहीं गए तो अति शोषक लोगों का दबाव बढ़ जाएगा। सज्जनों के जाने से राजनीति का भला ही होगा।

एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि अनादि काल से ही सब जगह खिचड़ी पकाने का राजनीति का स्वभाव है।

एक सद्गृहस्थ को क्या करना चाहिए? पूछा जाने पर संतश्री ने कहा कि उसे दीन - दुखियों की सेवा करना चाहिए। धर्म लाभ प्राप्त करना चाहिए। शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए। धर्मशालाएँ, प्याऊ, कुएँ बनवाना, चाहिए। वृद्ध, अपंग और निराश्रितों की सेवा करना चाहिए। साधु संतों के सान्निध्य में कुछ समय व्यतीत करना चाहिए। इंद्रियों पर नियंत्रण करना सीखना चाहिए। सभी प्रकार के मायावी प्रलोभनों से वैराग्य निर्मित करना चाहिए। संतों और सज्जनों का संग करेंगे तो बराबर उनके जैसे गुण आएँगे। आखिरकार गृहस्थियों में से ही तो त्यागी पैदा हुए हैं। भगवान के पिताश्री भी गृहस्थ ही रहे हैं। भगवान महावीर, गौतम बुद्ध और अन्यान्य ऐसे उदाहरण सामने हैं। बस, फर्क यही है कि वे संयमी और

सदाचारी गृहस्थ रहे।

मदर टेरेसा की चर्चा पर बापू ने कहा कि उन पर परोपकार का लेबल जरूर है। परन्तु संपूर्ण ईसाई मिशनरी उनके पीछे एकजुट होकर काम कर रही है। हिंदू साधु कई हैं जो मदर टेरेसा से कहीं अधिक कार्य कर रहे हैं। परन्तु उन्हें आगे लाने के साधन इतने प्रचुर नहीं हैं। आपने साफ - साफ कहा कि देश में ईसाई मिशनरी का फैलाव हिंदू धर्म के लिए खतरा है। सरकार और हिंदू जाति को सतर्क हो जाना चाहिए। आज हिंदुओं को दो बीघा जमीन पाने में पसीना आ जाता है पर ईसाई मिशनरी को १०० बीघा भूमि एक झटके में आसानी से दी जाती है। बापू ने स्पष्ट कहा कि इसके लिए राजनीतिज्ञ भी समान रूप से जिम्मेदार हैं। ये मिशनरियाँ राजनीतिज्ञों का पूरा फायदा ले रही हैं। हिंदू जो घर के हैं - घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध। हम अपने ही देश में पराए हैं।

संत प्रवर ने कहा कि भारतीय संस्कृति विश्व में सबसे प्राचीन है। बाकी सभी संस्कृतियाँ और धर्म बाद में आए। फिर चाहे वह मुस्लिम हो, ईसाई हो अथवा कोई और। सनातन धर्म ही ऐसा है जिसमें प्रार्थना, ध्यान, तप, एकता सभी उपलब्ध है और किसी धर्म में ये सभी नहीं है। खेद का विषय है कि फिर भी हम कुचले जा रहे हैं। सही तो यह है कि भारतीय संस्कृति के प्रचार की कमी है।

बापू आसारामजी ने बताया कि सिंहस्थ में पहली बार यहाँ रह रहा हूँ। पहले आया जरूर, पर सिंहस्थ के क्षिप्रा स्नान का लाभ लेकर वापस चला गया। इस बार भक्तों का बहुत आग्रह था इसलिए आया।

सफेद वस्त्र ही धारण करने के प्रश्न पर बापू ने कहा कि भगवा वस्त्र धारण करने का अधिकार उन्हीं को है, जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया हो। मैं सांसारिक रहते हुए धर्म और ईशप्राप्ति की दिशा में बढ़ रहा हूँ। इसलिए सफेद वस्त्र धारण करता हूँ।

आसारामजी ने कहा कि धर्म दो प्रकार के होते हैं : सर्व सामान्य और विशेष। अहिंसा पर चलना, धर्मलाभ लेना, सद्गृहस्थ का जीवन जीना आदि सर्वसामान्य धर्म है। विशेष धर्म है तप, व्रत, ध्यान, समाधि और योगाभ्यास।

कुंडलिनी योग की

बचपन से साधना में रुचि बढ़ी

संत प्रवर आसाराम बापू तीन वर्ष के थे तभी से आध्यात्मिक गुण नजर आने लगे। बड़े भाई को एक कविता याद न होने पर जब मास्टरजी मारने की तैयारी में थे तो उन्होंने हस्तक्षेप कर कविता सुना दी। बस! तभी से लोग उनके दर्शन करने आना शुरू हो गए। कुलगुरु ने कहा कि संत बनेंगे। १० वर्ष की उम्र से साधना में रुचि बढ़ी। नगरसेठ के पुत्र थे। सिंध के नवाब शाह जिले के बैरानी गाँव में रहने वाले आसारामजी को भी उम्र के साथ आसक्ति बढ़ाने वाले लोग मिले। ४ फिल्में भी देख डालीं, जिनमें एक 'हकीकत' थी। घर वालों ने जबरन मँगनी करा दी। घर से चले गए। घर वाले समझा - बुझा कर लाए। फिर शादी हो गई। पत्नी को कह दिया कि मेरा लक्ष्य परमात्मा है। ७ साल गुरु स्वामी लीलाशाह के सान्निध्य में साधना करके लौटे। परिवार में आना - जाना रहा। एक पुत्र हो गया - नारायण, जो अभी बापू के साथ ही रहता है। फिर पुत्रीरत्न प्राप्त हुआ। अभी धर्मपत्नी और पुत्री भारती, महिला आश्रम (गुजरात) में ही रहती हैं।

चर्चा करते हुए आपने कहा कि इस युग के लिए यह ईश्वर की देन है। विकारी व्यक्ति भी इसे कर सकता है। आज इस योग में सही प्रशिक्षित व्यक्ति बहुत कम हैं। सीखने वालों की संख्या भी काफी कम है। साधक अपने नियत समय, नियत स्थान पर इस योग को कर सकता है। इसी सिलसिले में देह रूपांतरण के प्रश्न पर आपने कहा कि यह संभव है। हिमालय की तराई में आज भी ऐसे संत मौजूद हैं। इससे आध्यात्मिकता तो प्रभावित नहीं होती पर वेश प्रभावित होता है। जिस संत को आत्मा का ज्ञान हो गया, वह फिर देह के झगड़े में नहीं पड़ता।

भूमिगत समाधि के मुद्दे पर संत प्रवर ने कहा कि यह समाधि नहीं है। प्राणों की मूर्छा है। उद्योग से भी गया बीता कार्य है यह।

अलौकिक अनुभव की व्याख्या करने के प्रश्न पर आसारामजी ने कहा कि व्यवहार में मिठास ही वह अनुभव है। ऐसा पुरुष किसी भी प्रकार की प्रतिकूलता से भयभीत नहीं होगा। मान - अपमान से उसे धक्का नहीं लगेगा। राग - द्वेष उसे परेशान नहीं करेंगे।

आपने कहा कि ईश्वर के साक्षात्कार के बाद ही जीना शुरू होता है। उसके पहले तो मजदूरी ही मजदूरी है। हर मनुष्य में श्रेष्ठ बनने की कामना रहती है। कामना से ही संसार चल रहा है।

एक ओर परिभाषा के प्रश्न पर बापू ने कहा कि खास व्यक्ति वह जो तुम्हारे पास है और खास काम वह जो तुम्हारे सामने है। राष्ट्र की समस्याओं के प्रश्न पर आपने कहा कि जब समस्याएँ सुलझने का अवसर आता है तो महापुरुष स्वयं वहाँ जाते हैं। समय आने पर ही इनका निराकरण होगा।

संतश्री आदिवासी इलाकों में जाकर उनके व्यसन छुड़वाने की दिशा में कार्य करते हैं। आदिवासियों के लिए भंडारा भी करते हैं। माला घुमाने की सीख देते हैं। वस्त्र देते हैं।

सिहस्थ पर्व पर जनसाधारण के लिए संदेश देते हुए बापू ने कहा कि सिहस्थ की प्राचीन गरिमा बनी रहे। गंजेड़ी, भंगेड़ी, धूर्त लोगों का हौसला न बढ़े। वृद्ध, गरीब, लाचार लोगों की सेवा का अवसर न छोड़ें। संयम, जप से काम करें।

आपने कहा कि आजकल यातायात के साधन बढ़ गए हैं। शोर - शराबा बढ़ गया है। सिहस्थ जैसे मेलों में राजनीतिक पार्टियाँ भी अपना प्रचार कर लेती हैं। सच्चे संत भी मिल जाते हैं।

– अरुण जैन

आसाराम बापू का स्वर्ण जयंती महोत्सव आज

उज्जैन २२ अप्रैल (निप्र)।

संत प्रवर आसारामजी बापू का स्वर्ण जयंती महोत्सव २३ अप्रैल को धूमधाम से बड़नगर - चिंतामणि रोड़ स्थित आसाराम नगर पर मनाया जाएगा। इस महोत्सव में देश - विदेश के करीब डेढ़ लाख भक्तों के भाग लेने की संभावना है। महोत्सव के लिए व्यापक पैमाने पर तैयारियाँ की गई हैं।

स्वर्ण जयंती महोत्सव पर्व पर संत सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। सम्मेलन में विभिन्न संत अपने उद्‌गार प्रकट करेंगे। संतों की सेवा में अन्नक्षेत्र प्रारंभ होगा। संध्या ८ बजे संत प्रवर मोरारी बापू संत आसाराम स्वर्ण जयंती महोत्सव में सम्मिलित होंगे। प्रसाद स्वरूप भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात की राधिकाएँ रास - गरबे प्रस्तुत करेंगी। ५१ कन्याओं द्वारा पूज्य बापू की आरती की जाएगी। एक भक्त महोत्सव के दौरान जादुई प्रदर्शन प्रस्तुत करेगा। स्वर्ण जयंती के अवसर पर नशामुक्ति हेतु एक केंद्र प्रारंभ किया जाएगा, जो नशा उन्मूलन हेतु प्रसार - प्रचार करेगा। इस अवसर पर आयोजित नेत्र परीक्षण शिविर में प्रसिद्ध नेत्ररोग विशेषज्ञ निःशुल्क चिकित्सा एवं परीक्षण करेंगे। चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा स्वर्ण जयंती महोत्सव पर चुंबकीय चिकित्सा द्वारा रोगों का निदान किया जाएगा।

*

दैनिक प्रजादूत

२४ अप्रैल १९९२

संतश्री आसारामजी की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

उज्जैन (नि. प्र.)

देश विदेश में प्रसिद्ध साबरमती आश्रम के अधिष्ठाता, कुण्डलिनी योग के समर्थ सद्‌गुरु पूज्यपाद संत श्री आसारामजी का स्वर्ण

जयन्ती महोत्सव सिंहस्थ क्षेत्र में हर्षोल्लास से मनाया गया।

महोत्सव में देशविदेश के अनुयायीओं तथा सिंहस्थ में पधारे महामण्डलेश्वर साधु सन्तों ने भाग लिया। विशेष रूप से संत मोरारीबापू भी इस महोत्सव में पधारे।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का शुभारम्भ भगवान महाकालेश्वर मन्दिर से हरि संकीर्तन यात्रा से हुआ। संकीर्तन यात्रा पटनीबाजार, गोपालमन्दिर, ढाबारोड़, छोटे पुल, पावन क्षिप्रा नदी से दत्त अखाड़ा क्षेत्र, बड़नगर रोड़ होती हुई आश्रम तक पहुँची।

इस यात्रा में सम्मिलित लोगों के लिए पूर्वान्ह १० से १२ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। संतश्री के जन्म दिवस २३ अप्रैल को १२ बजे शंखनाद, विविध नादों से संतजी की पूजा अर्चना की गई। उस अवसर पर कन्याओं ने मंगल कलश से स्वागत किया।

स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर संत आसाराम नगर को विशेष रूप से सजाया गया है।

आसारामजी बापू

एक भक्त द्वारा जादुई प्रदर्शन का कार्यक्रम भी दिखाया गया।

इस अवसर पर नशामुक्ति के लिए एक केन्द्र का शुभारम्भ किया गया।

इन्दौर केन्सर अस्पताल के तीन वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सक द्वारा आध्यात्मिक के साथ साथ वैज्ञानिक सत्य का संयोजन करते हुए नशामुक्ति के लिये एक स्टाल बनाया गया है।

संत आसारामजी के जनसम्पर्क अधिकारी श्री ईश्वरभाई नाईक ने बताया कि नगर में दस हजार साधकों के लिए आवास योजना की निःशुल्क व्यवस्था की गई है।

आश्रम में फल, कपड़े, लान्ड्री, दूध व स्वल्पाहार के स्टाल भी लगाये गये हैं।

आश्रम में ६ चलित झाँकियाँ व संत साहित्य के स्टाल व फव्वारे भी हैं। संत विभूति दर्शन की झाँकी पूज्य बापू की सचित्र जीवनकथा तथा ५५ हजार लोगों को बैठने की व्यवस्था का पण्डाल बनाया गया है। आश्रम में वीडियों फिल्म प्रदर्शन किया जाता है।

सम्पादकों की सुविधा के लिये आश्रम में अन्य व्यवस्थाओं के साथ ही प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र भी खोला गया है। निःशुल्क प्रावृत्तिक चिकित्सा व चुम्बकीय चिकित्सा, नेत्र चिकित्सा शिविर भी रखा गया है।

*

दैनिकभास्कर

२४ अप्रैल १९९२

संत आसारामजी का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव धूमधाम से मना

उज्जैन, (निप्र)

उज्जैनवासियों तथा सिंहस्थ में पधारे हजारों यात्रियों को आज का यह दिन हमेशा इसलिए याद रहेगा कि उनके नयनों ने आसाराम महाराज के जन्म दिवस पर आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह सोल्लास मनते देखा।

इस अवसर पर प्रातःकाल हरिनाम संकीर्तन यात्रा महाकाल से निकाली गई, जो प्रातः १० बजे आसाराम नगर पहुँची। यात्रा के आगमन के पश्चात् प्रातः साढ़े १० बजे बापू का आगमन हुआ। तत्पश्चात् उनका अभिवादन एवं स्वस्ति अर्चन हुआ। ब्राह्मणों द्वारा वेदोक्त रीति से व्यासपीठ पर बापू का पूजन किया गया। तत्पश्चात् देश - विदेश में स्थापित बापू के ध्यानकेन्द्रों के अध्यक्षों ने बापू का फूलहार से स्वागत किया।

वाणिज्यिक करमंत्री बाबूलाल जैन ने बापू का अभिवादन करते हुए उनके यहाँ आगमन पर कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कामना की कि बापू के आने से सिंहस्थ को पूर्णता प्राप्त हुई है। इस अवसर पर पंडाल में लगभग ५५ हजार श्रोता मौजूद थे।

इसके उपरांत बापू ने अपनी अमृतवाणी में लोगों को उपदेश दिए। दोपहर एक बजे घंटनाद, शंखनाद तथा आरती कर, बापू का जन्मदिन मनाया गया। आरती के बाद दर्शन के लिए दो घंटे तक माला लिए दर्शनार्थी खड़े रहे। बाहर से पधारे साधुओं को भोजन तथा दक्षिणा दी गई। विशेषकर गुजरात का आमरस परोसा गया। भण्डारा शाम साढ़े चार बजे तक चलता रहा।
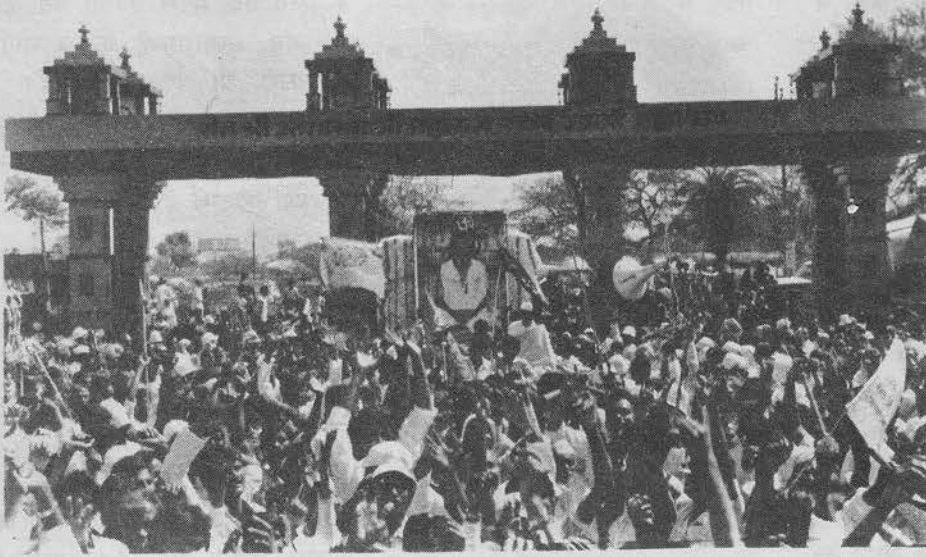
विभिन्न अखाड़ों के लगभग ३ हजार आमंत्रित संत भी मौजूद थे। गुजरात सरकार के कतिपय मंत्री भी महोत्सव में मौजूद थे। उन्होंने भी बापू का अभिवादन किया। एक कवि ने बापू के सम्मान में रचना सुनाई।

*

नईदुनिया

१ मई १९९२

हृदय में विराजमान ईश्वर से संबंध बनाएँ

उज्जैन ३० अप्रैल (निप्र)

मनुष्य जीवन के आरंभ से अंत तक संबंध बनाए रखता है। वह दुनिया से सहज में ही संबंध बना सकता है। उसे वास्तव में अपने हृदय में विराजमान ईश्वर से संबंध बनाए रखना चाहिए।

ये उद्गार संत आसारामजी ने अपने प्रवचन में प्रकट किए। आपने कहा कि मनुष्य व पशु में आहार, निद्रा, भय और मैथुन समान है। किंतु धर्म ही मनुष्य को पशु से विशेष बनाता है। मनुष्य मन के द्वारा परमात्मा से संबंध जोड़ सकता है।

आपने कहा कि मनुष्य के जीवन में दीक्षा होने पर ही उसका व समाज का कल्याण होगा। मनुष्य ने अपनी शिक्षा के द्वारा सुविधाएँ जुटा ली हैं, किंतु सद्गुरु की दीक्षा न होने से वह अनुचित साधनों का उपयोग कर अपना नाश कर लेता है। दीक्षा न होने के कारण संसार में शोषण, दुराचार व अत्याचार बढ़ रहा है।

संतश्री ने बताया कि मनुष्य को कर्मों का फल भुगतना होता है। अतः मनुष्य को उत्तम कर्म करना चाहिए। सभी के साथ समता का व्यवहार करना चाहिए। भगवान का भक्त आलस्य, पलायनवाद, अकर्मण्यता व प्रमाद को अपने जीवन में जगह नहीं देता है। भक्त अपने कर्त्तव्य कर्म को भगवान की पूजा समझकर तन्मयता से करता है।

भोजन व्यवस्था

संत आसाराम नगर में संतों के लिए प्रातः ८ से ९ बजे अल्पाहार, दोपहर १ से ३ बजे भोजन, सत्संग के समय शर्बत व छाछ की व्यवस्था की

गई है। वायु प्रदूषण को दूर करने के लिए, आत्मशांति व विश्वशांति के लिए वैदिक मंत्रों के साथ यज्ञ किया जा रहा है।

मान नहीं देंगे तो मान नहीं मिलेगा : संत आसारामजी बापू

उज्जैन ३० अप्रैल (निप्र)

प्रकृति का नियम है : आप मान देते हैं तो मान मिलता है, मान नहीं देंगे तो मान नहीं मिलेगा। पैसा सब कुछ नहीं है। उससे शांति नहीं मिलती है। सत्कर्म से शांति मिलती है। कर्म बोलता है... सत्कर्म करेगा तो वह कार्य पवित्र होगा। कर्म में शक्ति है।

उज्जैन चेरिटेबल ट्रस्ट हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर द्वारा बुधवारिया में निर्मित अस्पताल के प्रथम चरण का उद्घाटन करते हुए संत आसारामजी ने कहा कि कोई भी अच्छा काम पैसे से नहीं रुकता। अच्छे कामों में दैवी शक्ति प्राप्त होती है। यह सेवा का कार्य जन कल्याण तो करेगा ही, किंतु उज्जैन का नाम भी रोशन करेगा। अगर अहम् के लिए कार्य किया गया है, तो उस कार्य में दैवी प्रकोप सहना पड़ता है। सत्कर्म करते समय वह अगर नाम के लिए किया जाता है तो वह सत्कर्म नहीं है। अपने - अपने कर्मों के द्वारा परमात्मा का नाम लेंगे तो ही कार्य सफल होगा।

आपने कहा कि सहयोग एवं भाईचारे से इतने कम समय में अस्पताल का निर्माण हो गया। आपने कहा कि दान का एवं धर्म का पैसा खाने से वंश कंगाल हो जाता है। आसारामजी ने कहा कि जीवन में शिक्षा के साथ दीक्षा की भी आवश्यकता है। दीक्षा जीवन में दिशा प्रदान करती है। आपने कहा कि ज्ञान के अभाव में विज्ञान विनाशकारी हो जाता है।

आपने प्राकृतिक चिकित्सा का उल्लेख करते हुए कहा कि चाहे कैसा भी सिरदर्द हो, दोनों हाथों की कोहनी को सात मिनट के लिए बाँध देने से दर्द मिट जाता है। तुलसी के पाँच पत्ते सुबह खाली पेट खाकर ऊपर से पानी पीने से कैंसर जैसे रोग मिट सकते हैं। बुढ़ापे में विशेष स्फूर्ति के लिए २५० ग्राम आम का रस, शहद दो बूँद, थोड़ा अदरक का रस, इलायची मिला कर लेने से बहुत लाभ होता है।

बापू ने कहा कि नर-नारी में जो बस रहा है वह नारायण है। रोम - रोम में जो रम रहा है वह राम है। शरीर का नाश होता है फिर भी जिसे काल मार नहीं सकता, वह अकाल पुरुष है। सब धर्म के गुरु और संप्रदाय के आचार्य कहते हैं कि हम चैतन्य हैं। सबके हृदय में राम बस रहा है। बापू ने अपनी लाक्षणिक मुद्रा में कहा 'जयरामजी की...' श्रोताओं ने भी उच्चार किया, 'जयरामजी की।'

विशेष अतिथि पायलेट बाबा ने कहा कि अस्पताल से उज्जयिनी नगरी की सेवा और मानवता का कार्य हो, ऐसी शुभकामना करता हूँ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री रामबाबा ने कहा कि जिनके हृदय में दूसरे के प्रति श्रद्धा होती है उसे किसी भी प्रकार की कमी नहीं होती है। आपने अस्पताल निर्माण के लिए एक लाख रुपए एवं २ वर्ष तक प्रतिमाह पाँच हजार रुपए देने की घोषणा की। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमलचंद मूथा ने स्वागत भाषण दिया एवं डॉ. सुधीर खवारीकर ने अस्पताल की जानकारी देते हुए कहा कि प्रथम चरण में ६५ लाख रुपए की लागत लग चुकी है। एक लाख पैंतालीस हजार वर्ग फुट में अस्पताल का निर्माण कार्य चल रहा है जो वर्ष १९९४ के मार्च तक पूर्ण हो जाएगा।

कार्यक्रम को वाणिज्यिक कर मंत्री बाबूलाल जैन ने संबोधित करते हुए कहा कि त्रिवेणी यहाँ विराजी हुई है और उसमें हम स्नान नहीं करें, ऐसा कैसे हो सकता है। हम उज्जैनवासी भाग्यवान हैं। प्रारंभ में सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। आसारामजी ने दीप प्रज्ज्वलित कर भगवान धन्वंतरि के चित्र पर माल्यार्पण किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमलचंद मूथा, उपाध्यक्ष नरेंद्र छाजेड़, सचिव डॉ. विजय महाडिक ने संतों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध समाजसेवी श्री एस. सुब्बाराव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री रमेश चातक ने किया एवं आभार सांसद श्री सत्यनारायण जटिया ने माना।

*

जब तक आत्मज्ञान न हो जाय तब तक निगुरे, मनमुख लोगों से सावधान रहो।

लोकस्वामी

२ मई १९९२

आसारामजी बापू

विश्व भर को सुख-शांति देने वाली संस्कृति ही भारतीय संस्कृति है

उज्जैन (निप्र)

चेरिटेबल ट्रस्ट हॉस्पिटल उज्जैन के उद्घाटन के अवसर पर संत आसारामजी बापू ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि बंद वस्तु को खुला करना उद्घाटन है। तन के रोग मिटाने के लिए अस्पताल का उद्घाटन हुआ, परंतु यह सौभाग्य की बात है कि जन्म - मरण को मिटाने वाली संतों की अस्पताल यहाँ शुरू की है।

प्राणीमात्र के हितैषी संत श्री आसाराम बापू ने कहा कि धर्म का कोई भी सत्कार्य कभी पैसे के कारण रुकता नहीं। अच्छा काम करने से दैवी शक्तियों का विकास होता है। जिस परमात्मा से संपूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है और जिसमें यह संपूर्ण जगत समाविष्ट है, उस परमात्मा की पूजा अपने कर्मों के द्वारा करके मनुष्य सिद्धि प्राप्त कर लेता है। तुम अच्छा काम करते हो, तो दूसरा कोई उसे देखे, सुने या नही, परंतु अंतर में बैठा हुआ अंतरयामी सब देखता है। अपने कर्मों के द्वारा उस परमात्मा का पूजन करने वाला अपने जीवन की शाम ढल जाए, उससे पहले जीवनदाता की मुलाकात कर लेता है।

पूज्य बापू ने कहा कि जिसके जीवन में सेवा नहीं है वह पशु के बराबर है। मनुष्य जो भरोसा परमात्मा पर रखना चाहिए, वह अगर पुत्र - पुत्री, मित्रों पर करेगा, तो दैवी विधान के अनुसार वह धोखा खाएगा। भरोसा करना है, तो ईश्वर पर करो, तुम्हारे लोक - परलोक दोनों सुधर जाएंगे। जो काम ईश्वर की प्रसन्नता के लिए होता है, उससे उसकी साधना होती है, परंतु जो कार्य करके मनुष्य अहंकार की वृद्धि करता है, उसको असफलता मिलती है।

सर्वधर्मदर्शनाचार्य, कुंडलिनी योग के अनुभवनिष्ठ ज्ञाता आसारामजी बापू ने कहा कि नर - नारी में जो बस रहा है, वह नारायण है, रोम - रोम में जो रम रहा है, वह राम है। शरीर का नाश होता है, फिर भी जिसे काल नहीं मार सकता, वह अकाल पुरुष है। सब धर्म के गुरु और संप्रदाय के आचार्य कहते हैं कि हम चैतन्य हैं, सबके अंतर में राम बस रहा है, पूज्य बापू ने अपनी लाक्षणिक मुद्रा में कहा - जय राम जी की, श्रोताओं ने भी प्रति उच्चार किया - 'जयरामजी की।

बापू ने कहा कि जीवन में शिक्षा के साथ दिक्षा की भी आवश्यकता है, अगर शिक्षा के साथ दीक्षा नहीं होगी, तो सुविधाएँ और आविष्कार देने वाला विज्ञान विनाश की ओर ले चलेगा। आज बापू ने शासन से बिजली की व्यवस्था का ध्यान रखने का अनुरोध किया। थोड़ी सी असावधानी से बिजली से लगी आग ने लाखों रु. का नुकसान कर दिया। उसका थोड़ा ध्यान रखा जाएगा, तो संपत्ति की सुरक्षा हो जाएगी।

पूज्य बापू ने कहा कि हमें पाश्चात्य देशों की कार्य करने की प्रणालियों को अपनाना होगा, परंतु वहाँ के डिस्को, सूट - टाई को अपने जीवन में लाने की जरूरत नहीं है। हमें सच्चाई, स्नेह, कर्मठता, अपलायनवादिता जीवन में रखना बहुत जरूरी है।

पूज्य बापू सर्वदर्शनाचार्य हैं। उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा का उल्लेख करते हुए कहा कि चाहे जैसा भी सिरदर्द हो, दोनों हाथों की कोहनी को सात मिनट के लिए बाँध देने से दर्द मिट जाता है। सुबह खाली पेट तुलसी के पाँच पत्ते चबाकर ऊपर से पानी पीने से कैंसर जैसे रोग मिट सकते हैं। बुढ़ापे में विशेष स्फूर्ति के लिए २५० ग्राम आम का रस, ५० ग्राम शहद, दो बूंद अदरक का रस, थोड़ी इलायची मिलाकर लेने से बहुत लाभ होता है।

पूज्य बापू ने भारतीय संस्कृति की महिमा बताते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति विश्व की सब संस्कृतियों से श्रेष्ठ है, अनादिकाल से है। वह अपनी अस्मिता और प्राचीनता टिकाए हुए है।

संत श्री आसारामजी

बार-बार जन्म लेने से बेहतर है इसी जन्म में ब्रह्म को प्राप्त करना

उज्जैन (निप्र)।

प्राचीन भारत की ब्रह्मविद्या के प्रणेता, कुंडलिनी योग के अनुभवनिष्ठ ज्ञाता, वेदांत निष्ठ, तपोनिष्ठ, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ योगीराज, पूज्यपाद संत श्री आसारामजी के दर्शन मात्र से, उनके सान्निध्य में ध्यान करने से संतप्रेमी, ईश्वर प्रेमी, जिज्ञासु, मुमुक्षु साधकों की कुंडलिनी जाग्रत होने लगती है।

ऐसे महान संत प्रवर ने 'लोक स्वामी' को चर्चा के लिए अपने प्रवचन के बाद समय दिया और कहा कि दुनिया में सबसे बड़ी चीज प्रेम है। प्रेम के कई रूप हैं। ईश्वर तुमसे प्यार करता है, तुम ईश्वर से प्यार करो। बार-बार जन्म लेने से बेहतर है कि इसी जन्म में ब्रह्म को प्राप्त कर लो। ईश्वर की सच्ची आराधना करो, मोक्ष अवश्य मिलेगा। बार-बार माता के गर्भ में मत आओ। अपने आपको पहचानो और आत्मज्ञान पाकर इसी जन्म में मुक्ति पा लो।

आपने कहा कि आत्मसुख से बढ़कर संसार की कोई चीज नहीं। स्वर्ग और स्वर्ग का सुख आत्मसुख के आगे कुछ भी नहीं है। इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं। आत्मनिष्ठा और लगन से किया गया कार्य सफलता और शांति देता ही है। हमने पूछा : बापू आपका उद्देश्य क्या है? बापू ने मुस्कुराते हुए कहा - ईश्वर भजन, भगवत आराधना, संदेश और भक्ति मार्ग से लोगों को जाग्रत करना, लोगों में बढ़ रही पाशविक प्रवृत्ति को दूर कर ईश्वरीय लगन से जोड़ना, हिंदुओं को संगठित करना, भक्ति की धारा से जिज्ञासुओं को तृप्त करना। आपने कहा कि इस समय देश विनाश के कगार पर खड़ा है। मनुष्य अपनी सनातन संस्कृति से विमुख होता जा रहा है। बाहरी तत्त्व इस देश की संस्कृति को क्षति पहुँचाने में सतत प्रयत्नशील हैं, इसलिए देश के युवाओं को धर्म से जोड़कर संस्कृति की रक्षा हेतु तैयार करना ही हमारा प्रमुख उद्देश्य है, क्योंकि धर्म का मार्ग बहुत ही सुगम और सीधा है। बड़ी - बड़ी क्रांतियाँ धर्म का परिणाम है।

आपने कहा कि जब तक व्यक्ति अपने धर्म को नहीं पहचानेगा, तब तक वह अपने धर्म की रक्षा भी नहीं करेगा। आपने उदाहरण देते हुए कहा कि मान लिया जाए कि किसी पिता का कोई पुत्र गुम हो जाए और ऐसी अवस्था में मिले कि वे एक - दूसरे को पहचान न पाएँ। यदि उस खोए पुत्र के सामने उसके पिता को कोई मारे, तो वह पुत्र उसकी रक्षा नहीं करेगा।

यदि कोई उसे बोध करवा दे कि ये जो पिट रहा है, वह तेरा खोया हुआ पिता है, तो वह अपनी जान की बाजी लगाकर भी अपने पिता की रक्षा करेगा। इसी प्रकार मनुष्य जब तक अपने धर्म को नहीं पहचानेगा, तब तक वह उसकी रक्षा नहीं कर पाएगा।

इस प्रतिनिधि ने पूछा : बापू! ऐसा क्यों हो रहा है?

तब बापू ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति धीरे-धीरे हमारे देश में अपना जाल फैलाती जा रही है। इसका प्रभाव केवल पुरानी पीढ़ी के लोगों पर नहीं पड़ा है. युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की गुलाम होती जा रही है। इसलिए हिन्दू धर्म के मानने वाले इन युवाओं को धर्म के करीब लाकर इन्हें आत्मज्ञान करवाना होगा।

हमने पूछा : बापू! लोगों के लिए आपका क्या संदेश है?

बापू ने कहा कि एक दूसरे से प्रेम करो, एक दूसरे के दर्द को पहचानो, कभी किसीको पीड़ा मत पहुँचाओ। ईश्वर की आराधना करो। नित्य देवदर्शन का लाभ लो। संतों का सत्संग करो। इस देश को समृद्ध तथा बलशाली बनाने का संकल्प धारण करो।

*

गुरु की सीख माने वह शिष्य है। अपने मन में जो आता है वह तो अज्ञानी, पामर, कुत्ता, गधा भी युगों से करता आया है। आप जैसा चाहते हो वैसा व्यवहार यदि करवाना हो तो गुरु के बजाय किसी चपरासी के पास चले जाओ। अपने मन के फँदे से बाहर निकलना हो तो जो मन के फँदे से निकल गये हैं उनके चरणों में अपने को फेंक देना पड़ता है।

दैनिक भास्कर

२ मई १९९२

संतों की अमृतवाणी

ईश्वर की शरण लेने से मनुष्य का अवश्य कल्याण होता है : आसारामजी

उज्जैन, (निप्र)।

सिंहस्थ मेले में देश के शीर्ष संतों द्वारा प्रवाहित हो रही ज्ञानगंगा की कुछ बूँदे यहाँ पाठकों के ज्ञानवर्द्धन हेतु संकलित हैं....

आसारामजी महाराज

आसाराम नगर में प्रवचन गादी से जनसामान्य का मार्गदर्शन करते हुए गुजरात के प्रसिद्ध संत श्री आसारामजी ने कहा कि अन्तर्यामी ईश्वर की शरण लेने से मनुष्य का अवश्य कल्याण होता है। उसके सहारे सब कार्य करने से मानव कार्य के बोझ से मुक्त हो जाता है। क्रिया का भार अपने ऊपर लेने से अहंकार की उत्पत्ति होती है। काम बिगड़ जाते हैं, जो सबसे बड़ा सहारा और पालनहार है, उस चैतन्यस्वरूप परमात्मा की शरण में जाने से सबका सहारा नहीं लेना पड़ता। कर्म करने के मध्य पौरुषता और अन्त में फल होता है। लड्डू या कुर्सी कर्मफल नहीं है। कर्म करने से अन्तःकरण में जो आनन्द आता है, वही वास्तविक फल है। चतुराई मात्र बेईमानी या पुरुषार्थ से सफल नहीं होती, बल्कि सफलता तब मिलती है, जब तुम्हारा चित्त परमात्मा से जाने-अनजाने में एक होता है।

आहार, निन्द्रा, भय और मैथुन ये चारों तो मनुष्य और पशु में समान हैं। एक धर्म ही है, जो मनुष्य को पशु से विशेष बनाता है। मशीन को क्रम दिया जाता है और मनुष्य को ज्ञान दिया जाता है। मनुष्य जीवन में दीक्षा होगी, तो उसका और समाज का कल्याण होगा।

सत्यमित्रानन्दजी

भारतमाता समन्वय शिविर, मुल्लापुरा नाका बड़नगर रोड़ पर आयोजित प्रवचन में निवृत्तमान शंकराचार्य सत्यमित्रानन्दजी ने कहा कि जीवन को शुक्लपक्ष की भाँति उज्ज्वल बनाएं। हमारे जीवन में दो कुल, दैवी कुल तथा आसुरी कुल हैं। आसुरी कुल जब बलवान होते हैं, तो सावधान रहना चाहिए, उसका साथ नहीं देना चाहिए।

संत श्री आसारामजी महाराज चेरिटेबल अस्पताल का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए.....।

दैवी कुल या दैवी सम्पदा की वृद्धि हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए। आसुरी सम्पत्ति राष्ट्र के लिए घातक है, आध्यात्मिक साधना में बाधक है। अतः ज्ञान, भक्ति वैराग्य, सत्संग आदि के द्वारा हमें दैवी सम्पत्ति में वृद्धि कर सद्‌गुणों का विकास करना चाहिए। दैवी गुणों का प्राधान्य होने से आसुरी गुण अपने आप में नष्ट हो जाते हैं।

परमानंद महाराज

अखण्ड परमधाम आश्रम में ज्ञानगंगा प्रवाहित करते हुए स्वामी परमानन्द महाराज ने कहा कि प्रणाम भी एक साधना है। नमस्कार का भी अद्वितीय चमत्कार है, जिसके आगे झुककर आनन्द प्राप्त हो, उसे मन ही मन प्रणाम करना चाहिए। जिस प्रकार सोये हुए बीजों को प्रकट करने के लिए नमी आवश्यक है उसी प्रकार चेतना की नमी को मन में आने दो। इन्द्रियाँ तथा नेत्र आपके सहयोगी हैं। आज देश में कई कर्म निश्चित हैं। ऊंचे स्तर के लोग काम नहीं करते। चैतन्यता इन्द्रियों की मोहताज नहीं है। ज्ञान तथा साक्षी को जन्म देने वाला गुरु है। खुदा - परमात्मा कहीं और नहीं, खुद अपने में है। सोहम् को गुप्त रखकर दूसरों का सम्मान करो।

नरेन्द्र चैतन्यजी

सुमेरु काशी मठ शंकराचार्य महाराज के सचिव नरेन्द्र चैतन्यजी महाराज ने कहा कि तंत्रों का लक्ष्य आदि से अन्त तक अद्वैत रहा है। तंत्र वेद का साक्षी है, परद्रव्य, परस्त्री तथा परागपाद से विमुख संयमी ब्राह्मण ही वाम मार्ग का अधिकारी होता है। वाम मार्ग सर्वोत्तम कर्म है। शिवजी ने इसे सर्वसिद्धिदायक बताया है। यह केवल जितेन्द्रीय व्यक्ति को ही सुलभ है। इसी प्रकार मेरुतंत्र, शंकर दिग्विजय आदि ग्रंथों में पंच अक्षरों की उपासना सर्वश्रेष्ठ एवं सिद्धिदायक बताई गई है।

किस आशा में शंख को फूंके बापू आसाराम।
रावण यहाँ हजार हैं नहीं एक भी राम॥

बालकृष्ण यतिजी

भारतीय संस्कृति शिक्षा संस्था ट्रस्ट के तत्त्वावधान में सम्बोधित करते हुए बालकृष्ण यतिजी महाराज ने कहा कि आज की शिक्षा का उद्देश्य मात्र जीविका रह गया है। जबकि शिक्षा जीविका नही अपितु जीवन के लिए होना चाहिए।

महामंडलेश्वर शिवेन्द्रपुरीजी ने कहा कि भक्ति जीवन का एक रस है। भक्ति का साधन श्रद्धा है। श्रद्धा में विश्वास का होना आवश्यक है। महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वरानंदजी (इन्दौर) ने कहा कि भक्ति हर किसी को प्राप्त नहीं होती। इसके लिए समर्पण करना पड़ता है। स्वामी रामकिशोर महाराज शाहपुरा वाला ने कहा कि भक्ति करने का अवसर सिर्फ मनुष्य जीवन में ही मिलता है। भगवान भावना में विराजते हैं। विरक्त संत ओमकारानंद ने कहा कि जब से भगवान हैं, तब से भक्ति चली आ रही है। ज्ञानी भक्त भगवान से कभी विलग नहीं होता।

कमलकिशोरजी

उजरखेड़ा बस स्टैण्ड के समीप स्थित पंडाल क्र. ४३७ में भक्तजनों को प्रवचन देते हुए पं. कमलकिशोर नागर ने कहा कि जिस प्रकार अच्छे अच्छे पदार्थ खिलाने के बाद बलि का बकरा काट दिया जाता है, उसी प्रकार बेईमानी अथवा अन्याय से पनप रहे व्यक्तियों पर मौत मंडराती है। यदि सांसारिक सुख के साथ ईश्वर को याद नहीं किया जाता, तो ऐसा व्यक्ति सम्मान का पात्र नहीं हो सकता। संसार में कभी किसी की बुराई मत करो। सबसे समझौता रखो, क्योंकि हम गृहस्थ हैं।

हरिदास महात्यागी

हरिद्वार के स्वामी हरिदास महात्यागी ने सत्संग परिचर्चा में कहा कि मनुष्य में ही चिंतन की प्रवृत्ति होती है, अन्य प्राणियों में नहीं। चिन्तन प्रवृत्ति के कारण ही आवागमन के चक्र से छुटकारा होता है। सत्संग तथा साधु संतों की वाणी से मानव जीवन संस्कारित होता है। भौतिक सुख के साथ आत्मिक सुख का मार्ग प्रशस्त होता है।

*

सुरत (गुजरात) से प्रकाशित गुजराती अखबार 'गुजरात समाचार' में छपे हुए सिंहस्थ कुम्भ (उज्जैन) के अहवाल का अनुवाद...

गुजरात समाचार

दिनांक : ३ मई १९९२

उज्जैन कुंभ मेले में आसारामजी नगर में सुन्दर व्यवस्था

सुरत, गुरुवार

आसाराम बापू

उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ कुंभ मेले में अनेक संतों, महंतों, मठाधीशों के अखाड़े, केम्प्स खोले गये हैं। उन सबमें सबसे अधिक विशाल, अधिकतम सुविधाओं से सुसज्ज केम्प गुजरात के पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू के स्वयंसेवकों ने खड़ा किया है, जिसका नाम है 'संत श्री आसारामजी नगर।'

दूर दूर से कुंभ स्नान के लिए आने वाले संतों, भक्तों, साधकों और मुमुक्षुओं के लिए संत श्री आसारामजी नगर में निवास, भोजन एवं पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू के आनन्दमय सत्संग की उत्तम व्यवस्था की गई है। ४० बीघा भूमि में विस्तीर्ण इस नगर का माहौल खूब स्वच्छ, शांत, हवा एवं प्रकाश की सुविधा से युक्त एवं मनोहर है।

प्रसिद्ध रामायण कथाकार श्री मोरारी बापू, अखण्डाश्रमवाले स्वामी श्री दयानन्द (चित्रकूट), शाहपुरा रामस्नेही सम्प्रदायवाले स्वामी रामकिशोरजी महाराज, सुरतगिरि बंगला कनखलवाले स्वामी श्री ब्रह्मानन्दजी आदि संतों ने भी संत श्री आसारामजी नगर की मुलाकात लेकर प्रशंसा के पुष्प बरसाये थे।

७ मई १९९२

सिद्ध परम्परा के सिद्धेश्वर संत प्रवर पू. श्री आसारामजी बापू के सान्निध्य में कुछ क्षण

आसाराम बापू

सिंहस्थ महापर्व पर अनेक सिद्ध संतों महापुरुषों के चरणों में जाने का सुअवसर मुझे ही नहीं वरन् सम्पूर्ण उज्जैन को भी प्राप्त हुआ है। इसी शृंखला में एक उच्चकोटि के सिद्ध संत पूज्य आसारामजी बापू के सान्निध्य में जाने का सुअवसर मुझे मिला। कभी तो मैं अपने भाग्य को, कभी पूर्व संस्कारों को और कभी बापू श्री की कृपा-शक्ति को बधाई और धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे इतनी सरलता सहजता से अपने चरणों में कुछ पल ठहरने की अनुमति दी।

उन्हें पास से देखने पर लगा कि उन्होंने अंतर साक्षात्कार कर लिया है। उनकी प्रवृत्ति अंतर्मुखी है। पूज्य बापू श्री का जन्म १९४१ वि. सं. १९९८ में चैत्र वद ६ के दिन सिंध के नवाब जिले के बैराणी गाँव में नगरसेठ श्री थाऊमल सिरुमलानी के परिवार में हुआ था। लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि यह साधारण बालक नहीं है, यह तो पूर्व जन्म का योगी है। सांसारिक जीवनचक्र के बढ़ते - बढ़ते आसुमल नाम का यह असाधारण बालक संसार की हर प्रक्रिया से गुजरता हुआ विरक्त भावना और प्रभुप्रेम में दीवानों की तरह पू. लीलाशाह बापू की महफिल में जा पहुँचा। शक्ति के वेग ने व पूज्य गुरु की कृपा ने इस आसुमल को आसाराम बना दिया जो आज विश्व कल्याण का आधार बन हमारे समक्ष हैं।

पूज्य बापू की कृपा इन दिनों हमारे शहर में मुक्त हस्त से बँट रही है। जो जितना लूट सकता है वह लूट ले क्योंकि ऐसे विरले संत बहुत भाग्य से, पुण्य से, प्रारब्ध वश पृथ्वी पर अवतार लेकर हमारे समक्ष हमारे पापों का क्षय करने आते हैं। बापू के पवित्र शब्दों के अनुसार —

तुच्छ वस्तुओं के सुख लेने की इच्छा से चित्त अशुद्ध होता है शुद्ध अन्तःकरण वाले का योग जल्दी सिद्ध होता है। सब प्रकार के प्रयत्नों के द्वारा अपने अन्तःकरण की रक्षा करनी चाहिए। वह कोषों का कोष है। उसकी रक्षा करना मनुष्यमात्र का कर्तव्य है क्योंकि उसी हृदय रूपी कोष में आत्म-खजाना भरा पड़ा है।

ईश्वरीय मस्ती में मस्त जीवन्मुक्त संत शिरोमणी श्री आसारामजी महाराज ने हजारों धर्मालु एवं साधु संतों के बीच मध्यान्ह संध्या के समय बताया कि छल छिद्र कपटों से अंतःकरण मलिन होता है।

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥

तीर्थक्षेत्र में अपने स्वत्व का, सात्त्विकता का, ईमानदारी का विशेष ख्याल रखना चाहिए।

कर्म दो प्रकार के होते हैं : एक स्मार्त एवं दूसरा भागवदीय।

स्मार्त कर्म, कर्मकाण्ड के पुन्य कर्म है परंतु भगवत्प्राप्ति एवं भगवत्प्राप्ति की इच्छा से भगवान को प्रसन्न करने के लिए जो कर्म किया जाता है वह भगवदीय कर्म है। उसका अनन्त फल मिलता है। जिससे अंतःकरणमें आनंद, शक्ति ईश्वरप्रीति, सेवा, सहानुभूति फलित हो वह उत्तम कर्म है। किसीके आगे बड़ा दिखाने के लिए, अपना प्रभाव जमाने के लिए किये गये कर्म राजस कर्म हैं। काम, क्रोध, मोह, प्रमाद को बढ़ानेवाले कर्म तामस कर्म हैं। परमात्मा को प्राप्त हुए महात्माओं की सेवा में जो कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं उनका अनंत फल मिलता है।

प्राणी मात्र के सर्वांगी विकास के लिए दिन रात प्रयत्नशील, धर्मधुराचार्य आसारामजी बापू ने कहा कि शुद्ध सात्त्विक आहार होगा तभी बुद्धि में उन्नत विचार रहेंगे। पूज्य बापू ने अण्डों का सख्त विरोध करते हुए कहा कि अण्डों के पीले भाग में कोलेस्ट्राल होता है। वह हृदयरोग को बढ़ाता है। सफेद भाग में विष होता है जिसमें रक्तविकार, अस्थमा, बदहजमी, कैंसर जैसे रोग बढ़ते हैं। आजकल टी. वी. में प्रचार होता है कि 'सण्डे हो या मंडे खाओ मुर्गी के अण्डे।' परंतु नया आव्हान बापू ने दिया कि **'सण्डे हो या मण्डे कभी न खाओ अण्डे।'**

पूज्य बापू ने कहा कि अपनों के प्रति न्याययुक्त व्यवहार करो और परायों के लिए उदारता का व्यवहार करो, इससे तुम्हारे कुटुम्ब और समाज में मधुरता व स्नेह बना रहेगा।

कुंडलिनी योग के अनुभवनिष्ठ आचार्य पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग की एक विलक्षणता है कि पूज्य बापू का सत्संग - प्रवचन शुरु होने के बाद कोई उठकर खड़ा हो वापस नही जा सकता। वह बरबश ही बापू के वचनों के साथ एकतार जुड़ जाता है। चालू सत्संग में पीछे से आकर कोई व्यक्ति श्रोताओं को लांघता हुआ आगे नहीं बढ़ सकता। उसे पीछे ही बैठना पड़ता है। पूज्य बापू का ऐसा कहना है कि श्रोता और वक्ता की एक तार जुड़ जाती है उस में विघ्न डालने वाला, बीच में खड़ा होकर या पीछे से चालू सत्संग में चलते हुए आगे आने पर वह इस तार को तोड़ने का पाप का भागी बनता है। सत्संग के पुण्य के बजाय उसको पाप पड़ता है।

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमने २३ अप्रैल को पूज्य बापू का स्वर्ण जयंती महोत्सव उनकी उपस्थिति में मनाया। बापू ने ५० वर्ष पूर्ण कर ५१ वे वर्ष में प्रवेश कर हमारे ऊपर कृपा की है। भूतभावन महाकाल व पूज्यश्री लीलाशाह बापू हमारे पूज्यश्री की उम्र अनेक वर्षों तक वृद्धि कर दें ताकि श्री बापू हमारे देश को सैकड़ों वर्षों तक मार्गदर्शन, कृपाश्रय देते रहें इसी कामना के साथ पूज्यश्री के चरणों में कोटिशः नमन... दंडवत्...

— विजयकुमार मिश्रा, उज्जैन

दैनिकभास्कर

८ मई १९९२

संत आसारामजी के पंडाल में स्वर्गिक सुख की अनुभूति होती है

* कैलाश सिसौदिया *

उज्जैन में रोज ही बड़ी संख्या में विभिन्न माध्यमों से, सिंहस्थ मेले का पुण्य कमाने और आनंद लेने के लिए भारी संख्या में लोग पहुँच रहे हैं। श्रद्धालु यात्रियों के उज्जैन आने का तांता लगा हुआ है। प्रयाग, हरिद्वार और नासिक की तरह ही उज्जैन में भी कुम्भ अथवा कहें सिंहस्थ महापर्व १२ वर्षों के बाद मनाया जा रहा है। बम की अफवाह भी श्रद्धालुओं की आस्था को डिगा नहीं पाई और वे विभिन्न संतों के डेरों में उनकी अमृतवाणी का श्रवण कर आत्मसात करने का संकल्प ले रहे हैं। भगवद् भक्ति के साथ ही श्रद्धालु श्रोताओं को इन आश्रमों में मिल रही विभिन्न सुविधाओं से भी भक्तजन प्रसन्न हैं। आइए... मैं आपको पूज्य संत आसारामजी के प्रवचन स्थल 'आसाराम नगर' लिए चलता हूँ।

संत आसाराम नगर में दिव्य सत्संगों के साथ ही विभिन्न सेवाओं का भी समावेश किया गया है। पाण्डाल में पूज्य बापू के प्रवचन प्रति शाम निरंतर चल रहे हैं। प्रातः आठ से नौ बजे तक संतों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था है। संतों के लिए खुला भण्डारा, दोपहर एक से तीन बजे तक चल रहा है। सत्संग के समय संतों को शर्बत और छाछ पिलाने की विशेष व्यवस्था है।

ऊधर व्यापारिक स्टॉलों पर श्रद्धालु श्रोताओं को काफी राहत मिल रही है। चाय मात्र पचास पैसे में उपलब्ध हो रही है। शाम को वहाँ आलू बड़े के

आसारामजी बापू

स्टॉल पर अनियंत्रित भीड़ रहती है। तरबूज की चाट का भी लोग आनंद ले रहे हैं। द्वार पर भी शीतल जल की प्याऊ है। प्रवचन के साथ ही स्थल पर जुटाई गई सुविधाओं को पाकर धर्मप्रेमी जनता को पाण्डाल में स्वर्गिक सुख की अनुभूति होती है। साहित्य में भी लोग रुचि दिखा रहे हैं।

संत श्री आसारामजी बापू के पाण्डाल की व्यवस्था ही कुछ इस प्रकार की है कि वहाँ पर एक आम आदमी को अपनापन महसूस होता है। ठहरने व भोजन की व्यवस्था मुक्त कंठ से सराही जा रही है। अच्छी व्यवस्था ने जहाँ आम आदमी के मन में अपना स्थान बनाया है, वहीं संतश्री के दर्शनों और मर्मस्पर्शी प्रवचनों ने भी अध्यात्मवादी जनता पर अपनी छाप छोड़ी है।

प्रवचनों के पश्चात् प्रसाद वितरण में अंतिम व्यक्ति को प्रसाद मिले, वहाँ तक संत श्री आसारामजी प्रवचन - स्थल पर मौजूद रहते हैं। जिज्ञासुओं से सीधे बात करते हैं। बापू से मिलने के लिए 'खास' और 'आम' को मापदण्ड नहीं बनाया गया है।

एक शिष्य के अनुसार संतश्री पाण्डाल की व्यवस्थाओं के प्रति भी सजग रहते हैं। प्रवचन के पूर्व या पश्चात् कभी भोजनशाला या आवासीय स्थल का निरीक्षण करते देखे जा सकते हैं। स्टॉल में सब कुछ मनचाही वस्तुएँ सस्ते में उपलब्ध कराई जा रही हैं। एक रुपये में बढ़िया लस्सी और पचास पैसे में बेहतरीन चाय उपलब्ध हो रही है। पाण्डाल में पुरुष एवं महिलाओं के बैठने की अलग - अलग व्यवस्था की गई है। महिला स्वयंसेविकाएं भी सेवा कार्य हेतु सजग दिखाई देती हैं। कुल मिलाकर हर व्यक्ति अपने सामर्थ्यानुसार धर्मप्रेमी जनता की सेवा करने में जुटा हुआ है।

पूज्य बापू के प्रवचन स्थल पर श्रोताओं और दर्शनार्थियों का तांता

लगा हुआ है। प्रत्येक विषय पर सीधे व सरल शब्दों में विवेचना देना बापू की एक विशेष शैली कही जाती है। उनका प्रसिद्ध 'हरिओम कीर्तन' श्रोताओं को झूमने पर विवश कर देता है। 'हरि ओम... हरि ओम' की मधुर धुन एक लंबे समय तक श्रोताओं को भगवद् भक्ति में लीन कर देती है।

अधिकांश धर्मप्रेमी लोगों ने श्रद्धावनत् होते हुए कहा कि कुल मिलाकर संत श्री आसाराम बापू के प्रवचन स्थल पर स्वर्गिक आनंद के अनुभव की अनुभूति होती है... । हरि ॐ ...

*

९ मई १९९२

परमात्मा को प्रेम करने से कर्म बंधनों से छुटकारा : आसारामजी बापू

संतों की अमृतवाणी

उज्जैन, (निप्र)।

सिंहस्थ महापर्व में देश के शीर्ष संतों के प्रवचन पाठकों की जानकारी हेतु यहाँ संकलित हैं। संत आसाराम नगर में प्रवचन देते हुए जीवन्मुक्त संत आसाराम महाराज ने कहा कि परमात्मा को प्रेम करने से कर्मबंधन से छुटकारा मिलता है। भगवान की माया ऐसी है कि जिनकी गोद में भगवान खेले हैं, वे भी उन्हें पहचान नहीं पाए। परमात्मा सब देश, काल, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति में मौजूद हैं। माया त्रिगुणात्मक है। तमोगुणी आलस्य, निद्रा तथा प्रमाद में आबद्ध रहता है। रजोगुण में व्यक्ति रंग-राग, भोग-विलास, काम-क्रोध में रम जाता है। सतोगुणी व्यक्ति साधु संतों की सेवा, नियम, व्रत, दान-पुण्य कर अनुष्ठान करता है। परन्तु जो माया को तरना चाहता है उसे त्रिगुणात्मक परमात्मा को प्यार करना चाहिए।

स्वामी सत्यमित्रानन्द

भारत माता समन्वय शिविर में प्रवचन देते हुए पूर्व शंकराचार्य सत्यमित्रानन्दगिरी ने कहा कि जगत में जितनी भी भौतिक तथा भोग की वस्तुएँ हैं वे एक न एक दिन समाप्त होने वाली हैं। केवल परमात्मा ही अक्षय हैं। अतः हमें क्षय से अक्षय की ओर जाने का यत्न करना चाहिए। परमात्मा में अटूट विश्वास होने पर ही उसकी कृपा होगी। जो व्यक्ति अधिक विश्वासशो परमात्मा का स्मरण करता है वह शांति प्राप्त कर सकता है, जो सन्देहग्रस्त होता है वह टूटन की ओर जाता है।

साध्वी ऋतम्भरा

अखण्डाश्रम में साध्वी ऋतम्भरा ने अपने प्रवचन में कहा कि हम सब मनोराग से पिटे हुए हैं। इसलिए अधिक समय तक न तो सुखी रह सकते हैं और दुखी संसार के दुखों से न योगी भाग सकता है और न ही भोगी। इसलिए सांसारिक भागदौड़ बंद कर दृष्टा बनो, साक्षी बनो।

*

९ मई १९९२

जप करने वाले के कार्यों में मंत्र शक्ति होती है

उज्जैन ८ मई (निप्र)। अधिक जप करने वाले के शरीर में दिव्य परमाणु प्रकट होते हैं। उसके रोम-रोम में दिव्य चेतना प्रसारित होती है। उसके कार्यों में मंत्रशक्ति का प्रभाव रहता है। ऐसे पुरुष तीर्थंकर बनते हैं।

ये विचार संत आसारामजी ने अपने प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। आसाराम नगर में आयोजित प्रवचन में आपने कहा कि जगत में जो भी तीर्थ बने हैं, वे सब ऐसे भगवत्प्राप्त मनुष्यों के प्रभाव से ही बने हैं। चतुराई, पद व अधिकारों को छोड़कर निर्दोष बच्चे के समान परमात्मा को पुकारना चाहिए। परमात्मा से संबंध शीघ्र स्थापित नहीं किया तो

मृत्यु का एक ही झटका लगने पर सब छूट जाएगा। लोभी धन के लिए, अहंकारी पद के लिए भक्ति करता है। कामी, स्त्री की भक्ति करता है। परंतु जिसे अपना जीवन सफल करना होता है वह परमात्मा की भक्ति करता है। आपने कहा कि मनुष्य को प्रातःकाल ही यह संकल्प करना चाहिए कि मैं दिन भर शुभ विचार, सत्यता, ईमानदारी, सेवा, सुहृदयता आदि के कार्य करूँगा। शुभ विचारों से कई जन्मों के पापों का नाश होता है। शुभ पुरुषार्थ में संकल्प अपना रखो, कृपा परमात्मा की चाहो तो कार्य अवश्य सफल होंगे। संत प्रवर ने कहा कि स्वयं में तुम खुद सुधार नहीं लाओगे तो दुनियाभर के सुधारक, महात्मा, गुरु भी तुम्हें नहीं बदल सकेंगे। कहने के पहले विचार कर लो कि जिससे बात कर रहे हैं उसमें परमात्मा विराजमान हैं।

*

दैनिक अवन्तिका

१० मई १९९२

हिन्दू धर्म में व्याप्त मत-मतान्तरों से राष्ट्र को लाभ मिलेगा

संत श्री आसारामजी की पत्रकारों से चर्चा

(मेला प्रतिनिधि द्वारा)

उज्जैन।

जिस धर्म में साधना की अनेकता नहीं होती वह वैरायटी जगत में दरिद्र माना जाता है। हिन्दू धर्म अनादि काल से बहुत प्रकार की साधना को अपनाया हुआ है। हिन्दू धर्म में व्याप्त मत-मतान्तरों से राष्ट्र को ही लाभ होता है। मत-मतान्तरों से लोगों की अंधश्रद्धा में कमी तो आ ही रही है, साथ ही लोगों की विचार और बौद्धिक शक्ति में इजाफा होगा, ऐसी मेरी मान्यता है।

ये विचार संत श्री आसारामजी महाराज ने कल रात्रि को पत्रकारों से चर्चा करते हुए व्यक्त किये।

महाराजश्री ने कहा कि हिन्दुस्तान में ही ईश्वर की ऐसी व्यवस्था है, जहाँ पर धार्मिक अवतार एवं महापुरुषों की कतार है। आडम्बर से हमारा चित्त, त्याग एवं साधना से भटकता है। एक प्रश्न के जवाब में संतश्री का कहना था कि न तो धर्म में राजनीति का और न ही राजनीति में धर्म का हस्तक्षेप होना चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में राजनीति को धर्म का ज्ञान रखकर अपने राजधर्म का पालन करना चाहिए।

आसारामजी बापू

आसारामजी बताते हैं कि उनके एवं आश्रम द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में सनातन धर्म की रक्षा के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। आदिवासियों को संस्कारित कर उन्हें धर्म से भटकाव से बचाया जा रहा है। ईसाई धर्म अपनाने वाले आदिवासियों को माला देकर, जल देकर, तिलक देकर, तिलक लगाकर उन्हें, शुद्ध करके वापस हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया जा रहा है।

महाराजश्री ने कहा कि पुरुष की उन्नति में पत्नी की उन्नति निहित होती है। इसलिए पत्नी को संयम रखकर, पति की उन्नति को ध्यान में रखकर फिर बच्चे को जन्म देना चाहिए। यह उसके लिए एवं समाज और राष्ट्र सबके लिए अच्छा होगा। भगवान में प्रतिष्ठित हुए संत-महात्माओं के चित्र धर्म के प्रति श्रद्धा और आस्था को अधिक मजबूत बनाते हैं। इस्लाम और ईसाई धर्म जहाँ करोड़ों रुपये व्यय कर धर्म का प्रचार कर रहे हैं तो हम क्यों चूकें? सनातन धर्म की पुस्तकें समाज को नाम मात्र का शुल्क लेकर प्रदान किया जाना, सेवाकार्य की भावना है। बच्चों को घरों में संस्कारित करने के लिए उन्हें अश्लील गीतों के गुनगुनाने से बचाने के लिए तथा उन्हें धर्म के चरित्र से अवगत कराने के लिए आडियो कैसेट का निर्माण किया जाता है। लोगों को यह क्षण भर के लिए आडम्बर दिख सकता है लेकिन इसके सद्प्रभावों

के परिणामों से इंकार नहीं कर सकते। चित्र, आडियो- विडियों कैसेट भक्त की भावना से ही खरीदे, देखे एवं पूजे जाएंगे।

संतश्री ने कहा कि ईश्वर में आसक्ति रखने वाला कभी किसी के साथ अन्याय नहीं कर सकता। आपने कहा कि क्रोध से मानव-रक्त जहर में बदल जाता है। क्रोध जल्दी जल्दी भोजन करने वाले को आता है। जो व्यक्ति घड़ी रखकर २० मिनट तक चबा-चबाकर भोजन पाता है, उसका ९० प्रतिशत क्रोध स्वत: ही दूर हो जाता है। दस प्रतिशत क्रोध भी उसके कारणों पर विचार करने से समाप्त हो जाएगा। एक प्रश्न के जवाब में आसारामजी ने कहा : अनियंत्रित भोग एवं वासना से अच्छी पीढ़ी का निर्माण रुक गया है। धर्मशास्त्र के जरिये ही मानवीय विकास किया जा सकता है, बन्दूक या राजदंड से नहीं।

*

१५ मई १९९२

विशेष लेख

सिंहस्थ

बदला काल, न बदले महाकाल

हर बारहवें बरस होनेवाले मेले में पुराने पंथों, संप्रदायों की जगह नए प्रवचनकारों, धार्मिक समूहों का ज्यादा रुतबा और असर...

अरविन्द मोहन (उज्जैन में)

इस शताब्दी के आखिरी सिंहस्थ पर अगली शताब्दी का असर साफ दिख रहा है। आकार, भव्यता, चमक-दमक, रीति-रिवाज, साज-सज्जा और प्रचार देखें तो मूल स्वरूप ही परिवर्तित हो गया है। स्थानीय माधोनगर मा. विद्यालय के अध्यापक काशीप्रसाद शर्मा कहते हैं : "यह पहली बार है जब मेले पर नागा संन्यासियों के अखाड़ों की जगह प्रवचन करने वालों की छाप ज्यादा प्रभावी दिखाई देती है।" उनकी राय में, बढ़ते भौतिकवाद में मानसिक शांति के लिए प्रवचन जरूरी हो गए हैं।

अक्षय तृतीया से शुरु हो रहे चार मुख्य स्नानों के पहले तक ७०० शिविर आबाद हो गए हैं। जिलाधीश विवेक ढांड के मुताबिक, "११०० पड़ावों को जमीन दी जा चुकी है।" कुछ पंथों, संप्रदायों, मठों में टूट से यह संख्या बढ़ी ही है लेकिन असली इजाफा किया है नए प्रवचनकारों, नए धार्मिक आंदोलन या नए संप्रदाय आरंभ करने का दावा करने वालों ने, जो मुख्य रूप से सदाचार और नैतिकता पर जोर देते हैं।

इनमें से दो - मुरारी बापू और आसारामजी बापू कुंभ पर छाए हुए हैं। दोनों गृहस्थ। दोनों गुजराती। दोनों मंत्रमुग्ध कर देने वाला प्रवचन करते हैं। दोनों चालीस के दशक में जन्मे हैं। मेले में हर जगह दोनों के पोस्टर, तोरणद्वार हैं।

प्रवचन के समय ३० से ४० हजार लोगों की भीड़ आसारामजी बापू के यहाँ होती है लेकिन प्रबंध कौशल दूसरों से ज्यादा अच्छा है। पहली बार कुंभ में शामिल होकर साढ़े आठ लाख वर्ग फुट क्षेत्र में अपना डेरा जमानेवाले आसाराम बापू के शिष्यों ने तैयारी आठ महीने पहले ही शुरू कर दी थी। तरह - तरह की झाँकियों से सजा यह

आसाराम बापू : प्रवचन की धूम

डेरा लोगों को आकर्षित करता है। यहाँ छोटा टेलीफोन एक्सचेंज भी काम कर रहा है। आज इसका काम इतना अच्छा हो गया है कि एक दिन में ५०,००० लोगों का भंडारा कराने पर एक कुत्ते का भी पेट भरने लायक जूठन नहीं बचती।

सिंहस्थ के प्रभारीमंत्री बाबूलाल जैन की निगाह में "नए प्रवचनकर्ताओं की सफलता दरअसल मनुष्य की संतों-स्वामियों से कुछ सीखने की भूख में निहित है..."

-- प्रसिद्धि की लड़ाई आसारामजी जीत चुके हैं।

इसके लिए उनके भक्तों ने प्रबंध और तकनीक की जो मदद ली है वह दूसरों को नसीब नहीं। अब तक उनके भाषणों के ६००० से ज्यादा ऑडियो टेप, ८०० से ज्यादा वीडियो टेप, ५० से ज्यादा यूमैटिक टेप और ५० से ज्यादा पुस्तकें छप चुकी हैं। प्रवचन खत्म होते ही उनके कैसेट बिकने लगते हैं। सस्ती प्रचार पुस्तिकाओं के वितरण-तंत्र ने गीता-प्रेस जैसी सबसे ज्यादा बिक्री करनेवाली संस्था को भी मात दे दी है।

...लाखों श्रद्धालु इहलोक की परेशानियों को भूल परलोक सुधारने के लिए यहाँ जुटते जा रहे हैं...

*

इन्दौर समाचार

१५ मई १९९२

भभूत और रिंग निकालना, आत्मज्ञान के आगे महत्त्व नहीं रखता : आसाराम बापू

उज्जैन।

परमात्मा को मिलने के लिये हृदय इच्छा, वासना से रहित रहना चाहिये। परमात्मा इन पाँचों पर विशेष कृपा करते हैं : जो धनवान होकर सरल हो, जो बलवान होकर भी विचारवान हो, जो निर्धन होकर भी दान करता हो, जो तपस्वी होकर भी निरभिमान हो तथा जो बचपन से ही भगवदभक्ति में लगा हुआ हो। इसके विपरीत उन पर विशेष नाराज रहते हैं, जो वृद्धावस्था में भी पाप करता हो, धनवान होकर भी दान नहीं करता हो, जो विद्वान होकर भी क्रियाभ्रष्ट हो। जीवन्मुक्त संत शिरोमणि आसारामजी बापू ने गंगाघाट क्षिप्रा के तट पर मौनी बाबा के आश्रम में हजारों भक्तों के सम्मुख ये वचन कहे। आगे पूज्य बापू ने कहा कि माता-पिता, गुरु, दीन-दुखी, वक्ता-श्रोता, सबकी गहराई में परमात्मा को ही देखिये, आपका महायज्ञ हो जायेगा। जो अतिथि में परमात्मा को देखता है वह परमात्मा की वास्तविक पूजा कर लेता है। जो अकड़कर अपने को बड़ा सिद्ध कर दिखाना चाहता है, उसका बड़प्पन टिकता ही नहीं है।

पूज्यपाद आसारामजी बापू ने अपनी प्रेमरस भरी वाणी से कहा कि रामकृष्ण ने अनेक साधनाएँ की, तोतापुरी के दर्शन हुए तब माता काली ने उन्हें कहा कि व्रत, उपासना, जप, तप का फल यही है कि तुझे ब्रह्मज्ञानी संत घर बैठे दर्शन देने को आये हैं और ब्रह्मज्ञान देने को तत्पर हुए हैं।

प्राणी मात्र की गहराई में एकमात्र

परमात्मा है। पितर, देवता, मनुष्य में भी वही विराजमान है, उसको सबका सुहृदय मानने वाला शान्ति को प्राप्त होता है। गोरखनाथ की पंक्ति कहते हुए कुंडलिनी योग के अनुभवनिष्ठ गुरु श्री बापू ने कहा कि :

हसिबो, खेलिबो, धरिबो ध्यान।
अहर्निश कथिबो ब्रह्मज्ञान।
खावे पीवे न करे मन भंगा।
कहे नाथ मैं तिसके संगा॥

जैसे किसी सेठ या बड़े साहब को मिलने जाने पर अच्छे कपड़े पहिनकर जाना पड़ता है ऐसे ही बड़े से बड़ा जो परमात्मा है, उसको मिलने के लिये अंतःकरण इच्छा, वासना से रहित, निर्मल रखना पड़ता है। कोई भी उपासना पूरे मन से होने पर ही सफल होती है। रामकृष्ण ने सखी संप्रदाय की साधना पूरे मन से की तब उनकी बोली में, वक्षस्थल में, महिलाओं के चिन्ह उभर आये। इतना ही नहीं, उन्हें मासिक स्राव भी आने लगा।

विष में भी अमृत की भावना करने पर वह अमृत साबित हो सकता है, मन ही शत्रु और मन ही मनुष्य का सच्चा मित्र है। मंत्र, तंत्र, भगवददर्शन, योग, सिद्धियों के बाद भी परमात्मा का साक्षात्कार तो बाकी ही रहता है। वह तो किसी सच्चे सद्‌गुरु की कृपा से ही होता है।

तीरथ नहाये एक फल।
संत मिले फल चार॥
सद्‌गुरु मिले अनन्त फल।
कहत कबीर विचार॥

पूज्य बापू ने भारतीय संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिये संतों को हर किस्म के नेताओं को आशीर्वाद देने से सावधान रहने को कहा। पूज्य बापू ने कहा कि जो नेता जनता को वोट और संतों के आशीर्वाद से चुनाव जीतें और फिर सत्ता का उपयोग अधर्मियों को आश्रय देने में करें एवं अपने धर्म की रक्षा में नहीं करें ऐसे नेताओं को आशीर्वाद नहीं देना चाहियें। प्रसिद्ध तांत्रिक मौनी बाबा के आश्रम में पूज्य बापू ने कहा कि भभूत निकालना, रिंग निकालना आदि आत्मज्ञान के आगे कुछ महत्त्व नहीं रखता है। अधिक जप से संकल्प सिद्ध होता है। स्वप्न में भगवत् दर्शन से साक्षात् दर्शन श्रेष्ठ है, उससे भी भगवान में तल्लीनता श्रेष्ठ है। पूज्य बापू के सत्संग-दर्शन के लिये मानव संसाधन मंत्री (केन्द्रीय) श्री अर्जुनसिंह भी कल आसाराम नगर में आये थे। पूज्य बापू के सत्संग प्रवचन कल से दोनों समय सुबह एवं सायं को होंगे।

*

दैनिक अग्निपथ

१५ मई १९९२

संत फर्जी नेताओं को आशीर्वाद न दें – संत आसारामजी बापू

उज्जैन।

परमात्मा को मिलने के लिये हृदय इच्छा, वासना से रहित रहना चाहिये। परमात्मा इन पाँचों पर विशेष कृपा करते हैं : जो धनवान होकर सरल हो, जो बलवान होकर भी विचारवान हो, जो निर्धन होकर भी दान करता हो, जो तपस्वी होकर भी निरभिमान हो तथा जो बचपन से ही भगवदभक्ति में लगा हुआ हो। इसके विपरीत उन पर विशेष नाराज रहते हैं, जो वृद्धावस्था में भी पाप करता हो, धनवान होकर भी दान नहीं करता हो, जो विद्वान होकर भी क्रियाभ्रष्ट हो।

जीवन्मुक्त संत शिरोमणि आसारामजी बापू ने गंगाघाट क्षिप्रा के तट पर मौनी बाबा के आश्रम में हजारों भक्तों के सम्मुख ये वचन कहे। आगे पूज्य बापू ने कहा : माता, पिता, गुरु, दीन, दुखी, वक्ता श्रोता, सबकी गहराई में परमात्मा को ही देखिये, आपका महायज्ञ हो जायेगा। जो अतिथि में परमात्मा को देखता है वह परमात्मा की वास्तविक पूजा कर लेता है। जो अकड़कर के अपने को बड़ा सिद्ध कर दिखाना चाहता है, उसका बड़प्पन टिकता ही नहीं है।

पूज्यपाद आसारामजी बापू ने अपनी प्रेमरस भरी वाणी में कहा कि रामकृष्ण ने अनेक साधनाएँ की, तोतापुरी के दर्शन हुए तो माता काली ने उन्हें कहा कि यह व्रत, उपासना, जप, तप का फल यही है कि तुझे ब्रह्मज्ञानी संत घर बैठे दर्शन देने को आये और ब्रह्मज्ञान देने को तत्पर हुए हैं।

प्राणीमात्र की गहराई में एकमात्र

परमात्मा है। पितर, देवता, मनुष्य में भी वही विराजमान है, उसको सबका सुहृदय मानने वाला शांति को प्राप्त होता है।

जैसे किसी सेठ या बड़े साहब को मिलने जाने पर अच्छे कपड़े पहिनकर जाना पड़ता है ऐसे ही बड़े से बड़ा परमात्मा है, उसको मिलने के लिये अंतःकरण इच्छा, वासना से रहित निर्मल रखना पड़ता है। कोई भी उपासना पूरे मन से होने पर ही वह सफल होती है। रामकृष्ण ने सखी संप्रदाय की साधना पूरे मन से की तब उनकी बोली में, वक्षस्थल में महिलाओं के चिन्ह उभर आये। इतना ही नहीं उन्हें मासिक स्राव भी आने लगा।

विष में भी अमृत की भावना करने पर वह अमृत साबित हो सकता है, मन ही शत्रु और मन ही मनुष्य का सच्चा मित्र है। मन्त्र, तन्त्र, भगवद दर्शन, योग, सिद्धियों के बाद भी परमात्मा का साक्षात्कार तो बाकी ही रहता है। वह तो किसी सच्चे सद्‌गुरु की कृपा से ही होता है।

पूज्य बापू ने भारतीय संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिये संतों को हर किस्म के नेताओं को आशीर्वाद देने से सावधान रहने को कहा। पूज्य बापू ने कहा कि जो नेता जनता के वोट और संतों के आशीर्वाद से चुनाव जीतें और फिर सत्ता का उपयोग अधर्मियों को आश्रय देने में करें एवं अपने धर्म की रक्षा में नहीं करें ऐसे नेताओं को आशीर्वाद नहीं देना चाहिए।

प्रसिद्ध तांत्रिक मौनी बाबा के आश्रम में पूज्य बापू ने कहा कि भभूत निकालना, रिंग निकालना आदि आत्मज्ञान के आगे कुछ महत्त्व नहीं रखता है। स्वप्न में भगवद दर्शन से साक्षात् दर्शन श्रेष्ठ है, उससे भी भगवान में तल्लीनता श्रेष्ठ है।

पूज्य बापू के सत्संग - दर्शन के लिये मानव संसाधन मन्त्री (केन्द्रीय) श्री अर्जुनसिंह भी कल आसाराम नगर में आये थे। पूज्य बापू के सत्संग प्रवचन कल से दोनों समय सुबह एवं सायं को होंगे।

*

१८ मई १९९२

बुराइयाँ मिटाने के लिए साधुओं का राजनीति में जाना स्वागत योग्य

शताब्दी के अंतिम कुंभ सिंहस्थ में आए प्रमुख संतों में आसाराम जी बापू अग्रिम पंक्ति में बैठे दिखाई दिए। उनके प्रवचनों के दौरान प्रायः जनसमूह उमड़ पड़ता रहा है। उनकी वाणी के ओज से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हुआ। 'अर्थ चेतना' से करीब डेढ़ घंटे की मुलाकात के दौरान उन्होंने धर्म, संप्रदाय, राजनीति आदि लगभग सभी विषयों पर पूछे गए सवालों के उत्कृष्ट जवाब दिए। यहाँ प्रस्तुत हैं उसी साक्षात्कार के अंश.....

(विजय गोयल एवं जयश्री द्वारा)

भारत की गरीबी के लिए बढ़ती आबादी दोषी : संत आसारामजी बापू ने कहा

प्रश्न – इतने लंबे समय से धर्म प्रचार करते हुए आपका क्या अनुभव रहा?

उत्तर – मेरा अनुभव बहुत अच्छा रहा है। आध्यात्मिकता का प्रचार प्रसार

करने से जो आध्यात्मिकता से वंचित थे उनकी कई बुरी आदतें छूटती हैं और जिनमें बुरी आदतें नहीं हैं उनको भक्ति का रंग लगता है। जिनको भक्ति का रंग लगा हुआ है उनको एकाग्रता का प्रसाद हजम होता है और जो एकाग्र पहले से ही हैं और मिलते हैं, उनमें एकाग्रता से पार परब्रह्म परमात्मा के साक्षात्कार की झलक उनके हृदय में झलकने लगती है। जैसे मास्टर को 'खुद' एम. ए. पास करने की जितनी खुशी होती है उससे अधिक अपने छात्र के एम. ए. करने पर होती है। ऐसे ही मुझे साधना से जो अनुभूति और आनंद हुआ वही आनंद मुझे प्रसाद को बाँटते हुए भी होता है और फिर मेरे गुरुदेव की भी इच्छा थी कि मैं हिमालय पर जाकर समाधिस्थ होने के बजाय समाज में बढ़े हुए रजो, तमोगुण हैं उन्हें सुधारूँ।

प्रश्न – ऐसे प्रतीत होता है कि लोगों में श्रद्धा भाव की कमी आई है। आप क्या सोचते हैं?

उत्तर – नहीं, पिछले कुछ वर्षों से तो आस्था बढ़ी है पूरे विश्व में।

प्रश्न – यह कुछ बनावटी तो नहीं है?

उत्तर – कुछ लोगों में श्रद्धा से धार्मिकता बढ़ी है और कुछ लोगों में दिखावटीपन भी है। पर देर सवेर उनका मन भी दिखावटी नहीं रहेगा। जो सच्ची श्रद्धा से रहते हैं उन्हें तो धन्यवाद! पर जो बनावट भी लाते हैं उन्हें भी लाख-लाख धन्यवाद!

प्रश्न – 'धर्मनिरपेक्षता' हमारे देश में क्या वास्तव में है?

उत्तर – 'धर्मनिरपेक्षता' नहीं है, अपना उल्लू सीधा करने पर ज्यादा ध्यान है।

प्रश्न – भारत को हिंदू राष्ट्र कहा जाता है, आपकी क्या राय है?

उत्तर – ठीक ही है। जहाँ हिंदू रहते हैं वह हिंदू राष्ट्र। भाषाओं से राष्ट्र का नाम रख लिया जैसे पाकिस्तान और अन्य। पर जब तक व्यक्ति के व्यवहार में धर्म नहीं आएगा तब तक कितने नाम रखते बदलते जाओ, कुछ खास फर्क नहीं होगा।

प्रश्न – धर्म के साथ राजनीति जुड़ गई है। धर्मप्रचारक भी राजनीति में आने लगे हैं, आप क्या सोचते हैं?

उत्तर – धर्म अगर राजनीति में आता है। तो अच्छा ही है। इन दोनों का फायदा समाज को मिलेगा। अगर साधु-जन देशहित में राजनीति में आते है तो उचित है। असाधु व्यक्ति ५०० गलती करता है तो साधु ५० ही करेगा।

प्रश्न – वर्तमान राजनीति को आप किस स्वरूप में देखते हैं?

उत्तर – वर्तमान राजनीति में सिर्फ अपने स्वार्थों को देखा जा रहा है। व्यक्ति धर्म का सहारा लेकर, किसी की बलि लेकर, सच्चाई की बलि लेकर अपनी तुच्छ महत्त्वाकांक्षा को महत्त्व दे रहा है, जिससे अपना और समाज का दोनों का अहित कर रहा है।

प्रश्न – आप किस पार्टी के पक्षधर हैं?

उत्तर – किसी विशेष पार्टी का नहीं। वे सारी पार्टियाँ जिस परमात्मा से उत्पन्न हुई हैं और जिस परमात्मा में जी रही हैं, उसी परमात्मा के नाते मैं सभी पार्टी वालों से प्यार करता हूँ, उनके मंगल की कामना करता हूँ।

प्रश्न – कभी राजनीति में जाने का विचार आपको आया?

उत्तर – स्वप्न में भी नहीं। ईश्वर की कृपा है। इतने पाप नहीं किये कि मुझे राजनीति में जाना पड़े।

प्रश्न – कुछ साधु राजनीति में कुछ लक्ष्य बनाकर गये हैं, जैसे मंदिर बनाना है, हिंदू राष्ट्र बनाना है आदि। इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर – यदि वे सचमुच बुराइयाँ मिटाने गये हैं, तो हम प्रसन्न हैं। पर अगर हम बहुसंख्यक समाज को ईंधन बनाकर खिचड़ी पकाने गये हैं तो गलत है। बात यह है कि अगर बगैर कुर्सी की चाह किये वे समाज को नीति और सही दिशा में ले जाने की आकांक्षा रखें तो ज्यादा ठीक है।

प्रश्न – देश में बढ़ रही सांप्रदायिकता के बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर – लोगों को भड़का कर कुछ हित साधने वाले यह सब करवाते हैं।

प्रश्न – क्या आप मानते हैं, देश में मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति चल रही है?

उत्तर – बिल्कुल चल रही है, सरकार का यह रवैया बिल्कुल गलत है।

आसारामजी बापू

प्रश्न – राम मंदिर के मुद्दे पर आप क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर – जो हुआ अच्छा हुआ, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। बाबर ने तोड़-फोड़ करके मस्जिद बनवा दी थी। अब अगर मंदिर वाले मंदिर बनवा रहे हैं तो क्या बुरा है?

प्रश्न – भाजपा ने मंदिर का मुद्दा उठाया है, इसको आप किस परिप्रेक्ष्य में देखते हैं?

उत्तर – पार्टी और देश दोनों के हित इससे साधे गये हैं। देश में भी जागृति आई है।

प्रश्न – भारतीय संस्कृति और इतिहास के प्रति पुनर्जागरण की दृष्टि से क्या किया जाना चाहिए?

उत्तर – जो गलत इतिहास लिखा गया है उसे बदलना चाहिए। जहाँ तक संस्कृति का प्रश्न है, हम बाहर विदेशोंम ें भी भारतीय संस्कृति पर प्रवचन देते हैं।

प्रश्न – नैतिक मूल्यों में आई गिरावट के प्रति आप क्या सोचते हैं?

उत्तर – इच्छा, वासनाएँ बढ़ाना अनैतिकता की ओर ले जाता है। टी. वी. आदि से अनर्गल बातें घर-घर में पहुँच रही हैं। इसलिए टी. वी. पर ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि वह तपस्वी साधुओं का सत्संग भी दे ताकि समाज को भौतिक नहीं, आत्मिक सुख मिले।

प्रश्न – दूरदर्शन कार्यक्रमों के बारे में आपकी क्या राय है?

उत्तर – इसमें सिर्फ सत्ताधारी पार्टी की वाहवाही होती है, और कुछ नहीं। अगर म. प्र. में भाजपा शासन नहीं होता तो सिंहस्थ को पूरा कवरेज दिया जाता। पर केन्द्र में काँग्रेसी सत्ता होने से उज्जैन को बिल्कुल भी प्राथमिकता नहीं दी गई।

प्रश्न – देश में चारित्रिक गिरावट तेजी से बढ़ रही है। आप इस विषय

आसारामजी बापू

पर कुछ कहना चाहेंगे?

उत्तर – पाश्चात्य प्रभाव, फिर हमारी पढ़ाई-लिखाई जो हमारे चरित्र को कहीं से भी पुष्ट नहीं करती। कुछ दोष हमारे माता-पिता का भी है जो लापरवाह हो रहे हैं। यह गिरावट अगर खत्म करनी हो तो सारे दोषों को खत्म करना होगा। देश को अभी बड़े-बड़े बाँध बनाने की अपेक्षा अच्छे इन्सान बनाने की ज्यादा आवश्यकता है ताकि भविष्य सुधर सके।

प्रश्न – समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों को कैसे हटाया जा सकता है?

उत्तर – जहाँ तक हमारा प्रश्न है हम समाज-जागृति के काम अपनी शक्ति अनुसार कर रहे हैं। देश में दूरदर्शन भी इस विषय में कुछ कर रहा है जो प्रशंसनीय है। यह कुछ इस युग का प्रभाव भी है इसलिए बहुत ज्यादा बुराइयाँ फैली हैं। सन् दो हजार के बाद कुछ तेजस्वी लोग सत्ता में आएंगे और करीब करीब ऐसी सभी बुराइयाँ और कुरीतियाँ समाप्त हो जाएंगी।

प्रश्न – आपके द्वारा चलाए जा रहे समाजसेवा के प्रकल्प के बारे में कुछ बताने का कष्ट करें

उत्तर – स्वयं मेरी पत्नी चलाती है। एक महिलाश्रम है जिसमें स्वस्थ शरीर की दृष्टि से कॉलेज के बच्चों को योग सिखाते हैं। शिशु को तेजस्वी बनाने के लिए भी योग करवाते हैं। नवजात बच्चे की जीभ पर शुद्ध घी से सोने की सलाई से 'ॐ' लिखा जाए तो वह कुल के सभी बच्चों से तेजस्वी होगा। तलाक की नौबत आने पर स्त्रियों को महिला आश्रम में लाकर हम सुलह भी करवाते हैं। पुरुषों के भी ११ आश्रम हैं, स्त्रियों के १३ आश्रम हैं। कुछ समितियाँ भी इन आश्रमों से जुड़ी हैं। देश-विदेश में हमारे सत्संग केन्द्रों की कुल संख्या ४६० है। इनसे होने वाली आय से हम अनाथों को भोजन करवाते हैं। जैसे अहमदाबाद में हमने ७० हजार बच्चों को भोजन दिया। ऐसी ही कुछ गतिविधियाँ विदेशों में भी चलाते हैं।

प्रश्न – तंत्र - मंत्र की कोई विद्या है या सचमुच ही कोई मूर्ख बनाते हैं?

उत्तर – शक्ति तो उस आत्मा परमात्मा से ही आती है। तांत्रिक जप करके भी इन्हें प्राप्त किया जा सकता है। पर ऐसी सारी शक्तियाँ ऐहिक जलवा देती हैं। परलोक सुधारने में यह शक्तियाँ मदद नहीं देतीं। तंत्र करने वाला जितना शुद्ध होगा वह कुछ सीमा तक अपने भक्तों को मदद कर सकेगा। जहाँ स्वार्थ आ गया वहाँ फिर कुछ नहीं होता। फिर कितनी बार तांत्रिक किसीको बीमार कर, किसीको थोड़ा बहुत अनिष्ट कर प्रभावित करने की कोशिश भी करता है। पर इस तंत्र की मैं आलोचना नहीं करता। सृष्टि में इसकी भी आवश्यकता है।

प्रश्न – आप सिंधी समाज में प्रमुख संत माने जाते हैं। पाकिस्तान में जो सिन्धी लोगों की समस्याएँ हैं, उस बारे में कुछ कहना चाहेंगे?

उत्तर – बहुत दुःख होता है यह सब पढ़कर। पाकिस्तान का मुझे निमंत्रण तो नहीं है पर मैं खुद ही वहाँ जाने वाला हूँ। कल ही मैंने एक व्यक्ति को इस बारे में फोन किया था।

प्रश्न – हिन्दू धर्म की किसी एक पुस्तक की व्याख्या नहीं होती है। हिन्दू धर्म सनातन है। पर क्या प्रगति के स्थान पर कभी-कभी इसकी अधोगति भी नहीं हुई?

उत्तर – नहीं, ऐसा मैं नहीं मानता। हिन्दू धर्म को किसी व्यक्ति ने स्थापित नहीं किया है। यह बहुआयामी धर्म है। इसलिये यहाँ राम और कृष्ण दोनों हुए। यह 'वेरायटी' ही हिन्दू धर्म की खासियत है। पर थोड़ा बहुत जो पतन दिखाई देता है उसका कारण यह है कि हिन्दू धर्म ने आत्मा-परमात्मा को पाने पर जोर दिया है, दूसरों को धर्म में घसीटने पर नहीं।

प्रश्न – चमत्कार और ईश्वर का क्या संबंध?

उत्तर – साधना के बल से चमत्कार हो सकते हैं। दूसरा, चमत्कार के नाम पर भ्रम फैलाया जाता है। मीरा, शबरी, गार्गी, प्रहलाद आदि की इतनी भक्ति थी कि प्रकृति स्वयं ही चमत्कार कर देती थी। कुछ चमत्कार जन्मजात भी कर सकते हैं अपने पूर्वजन्म के आधार पर, जैसे संत ज्ञानेश्वर और मेरे गुरुदेव लीलाशाह बापू।

प्रश्न – हमारे देश में धार्मिकता के कारण दरिद्रता है?

उत्तर – धार्मिकता के कारण हम गरीब हैं ऐसा नहीं है। हमारा देश सोने की चिड़िया का देश है यह अक्षरशः सच है। **हमारी अभी की गरीबी का कारण तो जनसंख्या का अधिक होना है।** फिर हमारे धर्म का स्वभाव भी व्यापक रहा। जो भी बाहरी आए हम उन्हें स्वीकारते चले गए। भले ही हम दरिद्र हों पर शांति और आनंद अभी भी विश्व में हमारे पास सबसे ज्यादा है। रही बात संपदा की, तो कभी यह सूर्य जापान पर चमका तो कभी लंदन पर तो कभी यह सूर्य भारत पर। हमें भले ही यह गरीबी दिखाई दे पर परदेश का करोड़पति भी इतना सुखी नहीं जितने हम लोग हैं। परदेश में वे गाड़ी बदलते हैं, पत्नी बदलते हैं, बच्चे बदलते हैं, पर शांति और सुख को नहीं प्राप्त कर पाते। हम कंगाल नहीं हैं। पूरे योरप में इतना सोना नहीं है जितना हमारे पास है। सिर्फ अराजकता के कारण हमारे यहाँ गरीबी है।

प्रश्न – भारत के अलावा दुनिया में कोई देश नहीं जो १००० साल तक गुलाम रहा। इसका कारण अध्यात्म से आई कायरता तो नहीं?

उत्तर – अध्यात्म से कायरता नहीं पर अध्यात्म को नहीं समझने से कायरता जरूर आई है। यह बीच में अहिंसा धर्म चला उससे जरूर हमारे देश को नुकसान हुआ। अहिंसा धर्म यह उन आक्रमणकारियों के वक्त बिल्कुल ही अनुपयोगी था। इससे कायरता भी आई। हम भी अभी सिर्फ राम राम नहीं करवाते बल्कि प्राणायाम भी करवाते हैं जिससे शक्ति आए। दुर्बलता पाप है शरीर की मन की।

*

दैनिकभास्कर

१८ मई १९९२

आसाराम महाराज का शाही स्नान

उज्जैन, (निप्र)। सिंहस्थ १९९२ में जिन संत के पाण्डाल में एक माह तक अनगिनत तीर्थयात्रियों का आवागमन बना रहा, उन्हीं संत आसारामजी महाराज ने शाही स्नान १६ मई को ब्राह्ममुहूर्त में ठीक सवा चार बजे अपने शिष्यों के साथ किया।

संतजी ने क्षिप्रा के पावन जल में ब्रह्मचर्य शाम्भवी शिक्षा अपने शिष्यों को दी। तत्पश्चात् संतजी की भव्य पेशवाई निकली। खुले हाथों से संतजी ने महंतों को प्रसाद वितरित किया। तत्पश्चात् सत्संग हुआ।

स्वदेश

२७ मई १९९२

अब आदिवासी को कोई ठग नहीं सकता, वह अपने धर्म में अटल है - आसारामजी बापू

सैलाना (नि.प्र)।

जिसको पाप में, दुराचार में, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने में मजा नहीं आता, उसके जन्म-मरण का चक्र जल्दी खत्म होता है। पापी को भोग-वासना से उबान नहीं आती। मृत्यु के बाद इस लोक का धन, संपत्ति, पुत्र, पत्नी, मकान कुछ साथ में नहीं आता। साथ में एक मात्र भगवान की भक्ति, भगवान का कीर्तन और संतों का संग, यही साथ में आता है।

प्राणी मात्र के परम हितैषी जीवन्मुक्त संत आसारामजी बापू ने सैलाना में आयोजित सत्संग समारोह में उपस्थित श्रद्धालु जनता एवं पचास हजार से अधिक आदिवासियों को अपनी मनमोहक पावन वाणी में कहा कि राम नाम से पाप कटते हैं। जिसका रखवाला भगवान हो, जिसने भगवान को संतुष्ट किया है, उसको किसी से घबराने की जरूरत नहीं है। दुनिया में धनवान, पुत्रवान, गाड़ीवान, सेठ, साहब कोई सुखी नहीं हैं। सुखी वही है, जो भगवान की शरण है।

पूज्य बापू ने आदिवासियों को उत्साह देते हुए कहा कि अब आदिवासी को कोई ठग नहीं सकता, उसको अपने धर्म से विचलित नहीं कर सकता। हालांकि आदिवासियों में बीड़ी, शराब, आदि व्यसन हैं। परन्तु साथ में आदिवासी वचन का पक्का है। एक बार वह कह देता है कि झूठ नहीं बोलूँगा, दारू, बीड़ी नहीं पीऊँगा, पत्नी से मारपीट नहीं करूँगा तो फिर वह उस बात में अटल रहता है।

पूज्य बापू ने आदिवासियों को समझाया कि शराब से दसवीं पीढ़ी तक के बच्चे को कैंसर हो सकता है। बीड़ी से दमा, ब्लडप्रेशर, रक्तविकार अम्ल पित्त आदि रोग हो सकते हैं।

आसारामजी बापू ने आदिवासियों को ब्याज पर पैसे लेकर शादी-ब्याह आदि में व्यर्थ खर्च न करने को भी कहा।

सैलाना, सरवन, दानपुर और इंटीरियर इलाके में से बड़ी संख्या में यहाँ आदिवासी लोग उपस्थित थे। यहाँ जो विराट शामियाना लगा था वह छोटा पड़ रहा था। तीन दिन तक यहाँ आदिवासियों को भोजन दिया गया था।

आदिवासियों को स्वामी लीलाशाह उपचार केन्द्र में मुफ्त दवाइयाँ दी गई थी। उनको भोजन उपरांत अन्न, वस्त्र, साबुन, जूते आदि भी दान किया गया था। कितने ही आदिवासियों ने बीड़ी, शराब नहीं पीने की प्रतीज्ञा ली थी। योग वेदांत सेवा समिति के सदस्यों ने बड़ी सुंदर व्यवस्था कराई थी।

भोजन, यातायात, जलपान, औषध, वस्त्रदान आदि व्यवस्थाएँ सराहनीय थीं। पूज्य बापू ने कहा कि राम राम कहने से, हरि कहने से, सुषुप्त शक्तियों का विकास होता है। बापू के सान्निध्य में पावनकारी, पापनाशक मधुर हरिनाम कीर्तन भी हुआ जिसमें उपस्थित सब लोग सराबोर हो गये थे.. कीर्तन-ध्यान के रंग में रंग गये थे। सैलाना विस्तार में यह सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला लगा था।

पूज्य बापू ने कहा कि बड़ों का मान करना

आसारामजी बापू

चाहिए। बड़ों के अपमान से पुण्य नष्ट होते हैं। गीता के श्लोक पाठ, भगवन्नाम कीर्तन एवं साधु पुरुषों के संग से करोड़ों तीर्थों का फल मिलता है। जीवन की शाम ढल जाये उससे पहले जीवनदाता से मुलाकात कर लेना चाहिए। यही मनुष्य का परम लक्ष्य है। आपसी वैर मिटाना चाहिए। अपने कुटुम्बी का और पड़ोसी का ख्याल रखना चाहिए। तुम्हारे पास जो है, उसमें से थोड़ा गरीब, अपाहिज, गर्जालू लोगों को दो, उन्हें संतोष होगा, उसका सुख आपको मिलेगा। प्राणी मात्र में परमात्मा है, उसका सदैव ख्याल रखो। किसीको पीड़ा पहुँचाने से उसके अन्दर परमात्मा दुखी होता है। लूट, मारपीट करके गुजारा नहीं करना चाहिए। अपने हाथों से मेहनत करके हक की कमाई का खाना चाहिए। भूत - प्रेत की बाधाओं में जंजीरें नहीं बँधाना चाहिए। पंचेड़ के आश्रम के बाबा, सिद्ध पीपल के पास हर गुरुवार रविवार को प्रेतबाधा का निवारण होता है। चबा-चबा कर खाने से क्रोध कम होता है। प्राणायाम करने से शक्तियों का विकास होता है।

दो दिन से सैलाना में सुबह पाँच बजे प्रभातफेरी निकलती है।

*

दैनिक राजपथ

२ जून १९९२

विज्ञान में अध्यात्म का मिलन जरूरी

- संत आसारामजी बापू

मथुरा।

विश्व विख्यात संत शिरोमणी एवं कुण्डलिनी योग के अनुभवनिष्ठ आचार्य आसारामजी महाराज ने आज अपने श्रौत मुनि आश्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा वस्तुओं का आविष्कार, संवर्द्धन एवं संस्कार करने का नाम विज्ञान है। जबकि अन्तःकरण के परिमार्जन व संस्कार को धर्म कहते हैं। विज्ञान संसार को सुविधायुक्त व सुन्दर बना सकता है तथा नये नये आविष्कार करके सांसारिक भौतिक लाभ पहुँचा सकता है। परन्तु इसके साथ धर्म और प्रेम का तत्त्वज्ञान इसमें नहीं शामिल हो तो यह विज्ञान सुख शांति देने के स्थान पर चोरी, बेईमानी, शोषण, भ्रष्टाचार और अन्त में विनाश की ओर संसार को धकेल देगा।

संतजी ने आगे एक उदाहरण देते हुए कहा कि धर्म के आश्रय बिना विज्ञान बन्दर के हाथ में दी हुई उस जलती लकड़ी के समान है जिससे वह किसी का घर भी आग के हवाले कर सकता है। इस युग में मनुष्य बन्दूक के घोड़े पर हाथ रखकर तथा बम व राइफलों पर भरोसा कर आराम का जीवन जीना चाहता है तो भला यह कैसे सम्भव होगा? ईश्वर के साथ अपना दिल मिला कर कोई भी आदमी शांति को प्राप्त कर सकता है।

*

बृजगरिमा

२ जून १९९२

परम संत श्री आसाराम बापू ने हजारों श्रद्धालुओं को मन्त्रमुग्ध किया

कुण्डलिनी योग के अनुभवनिष्ठ ज्ञाता एवं शक्तिपात दीक्षा के समर्थ सद्‌गुरु पूज्य श्री बापू ने कहा कि जिसने परमात्मा को संतुष्ट किया है उसे किसीसे घबराने की जरूरत नहीं है। दुनिया में धनवान, पुत्रवान, गाड़ीवान, सेठ, साहब कोई पूर्ण सुखी नहीं है। पूर्ण सुखी वही है, जो परमात्मा की शरण में है।

गीता के श्लोक पाठ करने से, हरिनाम कीर्तन करने से एवं परमात्मा के प्यारे संतों का दर्शन करने से करोड़ों तीर्थों का फल मिल सकता है। भारतीय सनातन धर्म की ऐसी महिमा है कि उसके ज्ञान को पाने वाला नतमस्तक हो जाता है। हमारे भगवान ऐसे हैं कि अर्जुन के घोड़ों की बागडोर पकड़ लेते हैं, गोपियों के आगे छछियन भरी छाछ के लिए नाच सकते हैं। शबरी के जूठे बेर भी खा लेते हैं और साथ ही उन्हें आत्मा-परमात्मा का ज्ञान भी दे सकते हैं ऐसा सत् चित् आनन्द

स्वरूप भगवान दुनिया के और किसी भी धर्म में नहीं है।

संत श्री आसारामजी अहमदाबाद के जाने-माने विश्व-प्रसिद्ध संत हैं। उनके आश्रम का परिसर 'संत श्री आसारामजी नगर' सिंहस्थ ९२ उज्जैन में सबसे बड़ा था जिसमें लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन लाभ लेते रहे। पूज्यश्री के १७ आश्रम पूरे देश में एवं ४७० सत्संग-केन्द्र देश-विदेश में कार्यरत हैं। पूज्यश्री का सत्संग आज श्रौत मुनि आश्रम में सुबह ९ से ११ और शाम ५ से ७ तक होगा।

कल ३ जून को भी इसी प्रकार कार्यक्रम होगा। वृंदावन की जनता परम संत के प्रवचन से लाभ उठाये।

*

(पेज ४२ से जारी...)

-यास किया जा रहा है, जबकि मुस्लिम मौलवियों को गलत साबित करने को कोई प्रयास नहीं किया जाता है। यह बड़ी सोचनीय बात है।

विरक्त शिरोमणि श्री वामदेवजी महाराज ने कहा : संत श्री आसारामजी के यहाँ सब से ज्यादा जनता आती है कारण कि इनके पास भगवन्नाम संकीर्तन का जादू, सरल व्यवहार, प्रेमरस भरी वाणी में संबोधन और जीवन के मूल प्रश्नों का उत्तर भी उनकी वाणी में मिलता है।"

लंडनवाले श्रीयुत् रामबाबाजी महाराज ने अपनी प्रेमवाणी में कहा कि : "आसारामजी बापू ने मुझे वह प्रेम दिया है, जो एक गौ अपने एक बछड़े को देती है। बापू के चरणों में मुझे जो स्थान मिला है, वह मेरा सौभाग्य है।"

लंडनवाले श्रीयुत् रामबाबाजी महाराज ने अपनी प्रेमवाणी में कहा कि :

"आसारामजी बापू ने मुझे वह प्रेम दिया है, जो एक गौ अपने एक बछड़े को देती है।' मानव शरीर बड़ा मूल्यवान है, जो इस शरीर को पा कर भी भवसागर नहीं तरता वह आत्मा हीन गति को प्राप्त होता है। बापू के चरणों में मुझे जो स्थान मिला है, वह मेरा सौभाग्य है।"

आज यहाँ संत-सम्मेलन में उपस्थित साधु-संतों का स्वागत किया गया। स्वामी वामदेवजी का स्वागत योग वेदांत सेवा समिति, ऊँझा के श्री मनुभाई पटेल ने किया। माँ निर्मला ज्योति का स्वागत योग वेदान्त सेवा समिति, सुरत की हर्षा बहन ने किया। स्वामी विवेकानन्दजी का स्वागत श्री उज्जैन समिति के बंसीलालजी गर्ग ने किया। युग पुरुष स्वामी परमानन्दजी महाराज का स्वागत बम्बई समिति के वासुमलजी श्रोफ ने किया। श्री नृत्यगोपालदासजी का स्वागत सिद्धपुर के केशुभाई पटेल ने, ब्रह्मानन्दगिरीजी एवं मुक्तानन्दजी महाराज का स्वागत भोपाल समिति के श्री राजेश गोयन्का ने किया तथा उपस्थित सब संतों का अभिवादन किया गया।

*

(पेज ४३ से जारी...)

खाँसी को रोकने से खाँसी की वृद्धि होती है, दमा, अरुचि, हृदय के रोग, क्षय, हिचकी जैसे श्वासनलिका के एवं फेफडों के रोग हो सकते हैं।

थकान के कारण फूली हुई साँस को रोकने से होनेवाले रोग

गुल्महृद्रोगसम्मोहाः श्रमश्वासाद्विधारितात्।

चलने से, दौड़ने से, व्यायाम करने से फूली हुई साँस को रोकने से गोला, आँतों के एवं हृदय के रोग, बेचैनी आदि होते हैं।

छींक रोकने से होनेवाले रोग

शिरोर्तिन्द्रियदौर्बल्यमन्यास्तम्भार्दितं क्षुतेः।

छींक को रोकने से सिरदर्द होता है, इन्द्रियाँ दुर्बल बनती हैं, गरदन अकड़ जाती है, अर्दित नामक वायुरोग माने मुँह का पक्षाघात, लकवा (Facial Paralysis) होने की संभावना रहती है।

*

संत श्री आसारामजी नगर उज्जैन में विराट संत-सम्मेलन में पधारे हुए संतों की वाणी

दिनांक : १५-५-९२

जीवन्मुक्त संत श्री आसारामजी बापू ने संत-सम्मेलन में उपस्थित हजारों साधु-संतों एवं लाखों भक्तों को अपनी प्रभावशील वाणी से मंत्रमुग्ध करते हुए कहा कि :

"जिनके अंदर आध्यात्मिक तेज है उनके नेत्रों में आनंद जगमगाता है। आप अपने व्यवहार से दूसरों को दुःख न हो, इसका ख्याल रखें। सब अपनी डफली बजाने और अपना राग आलापने लगेंगे तो काम नहीं चलेगा।

अपने जीवन में संयम की आवश्यकता है। जो घोड़ा लगाम नहीं लगाने देता वह किसी काम का नहीं है। ऐसे ही जो मन संयम नहीं बरतता, वह किसी बड़े काम के लायक नहीं है। पशुओं के लिए चाबुक होती है, परन्तु मनुष्य को बुद्धि की लगाम है। सरिता भी दो किनारों से बँधी रहती है और सागर तक पहुँचती है। जिसने अपने अन्तःकरण के ज्ञान स्वभाव की रक्षा की उसने सब को संभाल लिया है।"

जो घोड़ा लगाम नहीं लगाने देता वह किसी काम का नहीं है। ऐसे ही जो मन संयम नहीं बरतता, वह किसी बड़े काम के लायक नहीं है। पशुओं के लिए चाबुक होती है, परन्तु मनुष्य को बुद्धि की लगाम है।

पूज्य बापू ने अपनी मन-मोहक परम पावन अमृतवाणी में आगे कहा कि : "आँख, कान, जिह्वा और पैर को जहाँ चाहे वहाँ न जाने देना यह आध्यात्मिक तेज है। वे तेजस्वी, अचलमना होते हैं।

मन तीन प्रकार का है :
पीपल के पत्ते जैसा, वृक्ष जैसा और पहाड़ जैसा। जिनका पहाड़ जैसा मन है वे अचलमना हैं।"

पूज्य बापू कहते हैं : एक गुजराती कहावत है :

चाय बिगड़ी तो सुबह बिगड़ी।
दाल बिगड़ी तो दिन बिगड़ा॥
आचार बिगड़ा तो साल बिगड़ा।
और पत्नी बिगड़ी तो जीवन बिगड़ा॥

पूज्य बापू ने आगे जोड़ते हुए कहा कि :

"अगर बुद्धि बिगड़ी तो चौरासी लाख जन्म बिगड़े और बुद्धि सुधरी तो बाकी का सब बिगड़ते हुए कुछ नहीं बिगड़ा। भोग सतत संतुष्टि नहीं देता। योगी ही सतत संतुष्ट रह सकता है।"

संत सम्मेलन की प्रवचन शृंखला में स्वामी योगानन्दजी ने कहा कि :

"जो इन्सान की कोख से जन्म लेकर इन्सान को प्यार नहीं कर सकता वह भगवान को भी प्यार नहीं कर सकता है। मनुष्य सेवा के द्वारा जगत का, प्रेम के द्वारा भगवान का एवं ज्ञान के द्वारा अपना उपकार कर सकता है।"

युग पुरुष स्वामी श्री परमानन्दजी ने कहा कि : "संसार की चर्चा पराधीन बनाती है, पतन की ओर ले जाती है और भगवान की चर्चा मुक्ति, संतुष्टि, निर्भयता एवं निश्चिंतता देनेवाली है। भगवत् कथा के अतिरिक्त ऐसा कोई साधन नहीं, जो भगवान से अभिन्न करा दे। अगर हृदय में अध्यात्म के प्रति आदर होगा तो संसार में जो भी नश्वर है उसका स्वतः ही त्याग हो जायेगा।"

स्वामी परमानन्दजी ने कहा कि : "स्वामी आसारामजी के पास भ्रान्ति तोड़ने की दृष्टि मिलती है।"

माँ निर्मला ज्योति ने कहा कि : "श्री आसाराम बापू

स्वामी परमानन्दजी ने कहा कि : "स्वामी आसारामजी के पास भ्रान्ति तोड़ने की दृष्टि मिलती है।"

ने जंगलों में, पहाड़ों में एवं एकान्त में कठिन तपस्या की है। मुझे उनके प्रथम दर्शन आज से २२ वर्ष पहले हुए थे। उन्होंने बताया कि : लीलाशाहजी महाराज हिन्दुस्तान के रत्न थे।

जो केवल शरीर को ही जानते हैं, जो केवल भोगों में ही आसक्त हैं वे आत्महन्ता हैं।"

अगर बुद्धि बिगड़ी तो चौरासी लाख जन्म बिगड़े और बुद्धि सुधरी तो बाकी का सब बिगड़ते हुए कुछ नहीं बिगड़ा। भोग सतत संतुष्टि नहीं देता। योगी ही सतत संतुष्ट रह सकता है।

नैमिषारण्य - निवासी स्वामी विवेकानन्दजी ने कहा कि :

"सिंहस्थ के नाम पर गृहस्थ एवं संत दोनों मिलकर धर्म का संरक्षण करते हैं। सूई जैसे फटे हुए कपड़ों को जोड़ती है, ठीक वैसे ही संत बिछुड़े हुए दिलों को मिलाते हैं। सत्संग से सच्ची जीवनदृष्टि प्राप्त होती है। मोह समाप्त होता है, परमात्मा में अनुराग होता है।"

हरिद्वार के निवासी स्वामी मुक्तानन्दजी महाराज ने कहा कि :

"सत्संग सुनकर बाद में उसमें निर्देशित मार्ग से जीवन बिताना चाहिए। धर्म के रास्ते भोग-सामग्री एवं विलासी आकर्षण स्थायी बवंडर है। भारत विश्व के तीसरे दर्जे के देशों में से एक है। चोरी, बेईमानी, अधर्म-विधर्म ये बवंडर हैं। भारतीय दर्शन तो जीते जी मुक्ति दिलाता है। गीता और कृष्ण को झूठा कहने वाला कदापि शिव नही हो सकता है।"

"धर्मचक्षु, दिव्य चक्षु और ज्ञानचक्षु ये तीन प्रकार के चक्षु होते हैं। ज्ञानचक्षु से परमात्मा का दर्शन होता है।

स्वामी ब्रह्मानन्दगिरी महाराज ने कहा कि : "आसारामजी महाराज ऐसी शक्ति के धनी हैं कि दृष्टिपात मात्र से लाखों लोगों के ज्ञानचक्षु खोलने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।"

स्वामी ब्रह्मानन्दगिरी महाराज ने कहा कि : "आसारामजी महाराज ऐसी शक्ति के धनी हैं कि दृष्टिपात मात्र से लाखों लोगों के ज्ञानचक्षु खोलने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।"

मणीराम छावनी, अयोध्या के संत श्री नृत्यगोपालदास जी महाराज ने कहा कि : "हमारी धर्म परम्परा में ३३ कोटि देव होते हैं। उन सब के परमात्मा एक ही काफी हैं। बड़े दुःख की बात है कि इतने सारे देवता और परमात्मा की छत्रछाया होते हुए भी कई लोग पीर की शरण में जाते हैं। यह हिन्दुत्व पर कलंक है। हमारे धर्म से विपरीत कहनेवाले चाहे कोई पैगम्बर या अवतार भी आया हो तो उनको हम कहेंगे, हमारा तुम से कोई नाता नहीं है।"

विरक्त शिरोमणि श्री वामदेवजी महाराज ने कहा : "संत श्री आसारामजी के यहाँ सब से ज्यादा जनता आती है कारण कि इनके पास भगवन्नाम संकीर्तन का जादू, सरल व्यवहार, प्रेमरस भरी वाणी में संबोधन और जीवन के मूल प्रश्नों का उत्तर भी उनकी वाणी में मिलता है।"

"समय के परिवर्तन के साथ सब बदलता है। भारतीय संस्कृति का ज्ञान अबदल है। प्रत्येक संस्कृति में भाषा, विचार और वेश आते रहते हैं। आज पश्चिमी महिलाएँ भारतीय संस्कृति के वेशपरिधान से आकर्षित होकर उसे अपनाती हैं। आज के विज्ञान ने सिद्ध किया है कि कम्प्युटर संस्कृत भाषा से जितना अच्छी तरह चल सकता है, और किसी भाषा से नहीं चल सकता। विश्व की अन्य सभी संस्कृतियों का साहित्य हमारे धर्म की सूक्तियाँ की भी बराबरी मुश्किल से कर सकता है। दूरदर्शन पर हिन्दू साधुओं को गलत साबित करने का

(अनु. पेज ४० पर)

जौ

प्राचीन काल से जौ का उपयोग होता चला आ रहा है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों का आहार मुख्यत: जौ थे। वेदों ने यज्ञ की आहुति के रूप में जौ का स्वीकार किया है। गुणवत्ता की दृष्टि से गेहूँ की अपेक्षा जौ हल्का धान्य हैं। उत्तर प्रदेश में गर्मी की ऋतु में भूख-प्यास शान्त करने के लिए सत्तू का उपयोग अधिक होता है। जौ को भुनकर, पीसकर, उसके आटे में थोड़ा सिंधव (नमक) और फिर पानी मिलाकर सत्तू बनाया जाता है। कोई लोग नमक की जगह गुड़ भी डालते हैं। सत्तू में घी और चीनी मिलाकर भी खाया जाता है।

जौ का सत्तू ठण्डा, अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला, हल्का, कब्जी तोड़नेवाला, कफ एवं पित्त को हरनेवाला, रुक्ष और मल को उखाड़नेवाला है। गर्मी से तपे हुए एवं कसरत से थके हुए लोगों के लिए सत्तू पीना हितकर है।

डायब्टीज के रोगी को जौ का आटा अधिक अनुकूल रहता है। इससे शरीर में शक्कर की मात्रा बढ़ती नहीं है। जिसके शरीर में चर्बी बढ़ गई हो, मेद बढ़ गया हो वह अगर गेहूँ और चावल छोड़कर जौ की रोटी एवं छाछ ले, जौ की रोटी एवं बाथू की या मेथी की भाजी का सेवन करे तो धीरे धीरे शरीर का मेद उतर जाता है, चर्बी की मात्रा कम हो जाती है। जौ मूत्रल (मूत्र लानेवाला पदार्थ) हैं अत: मूत्र खुलकर होता है।

जौ को कूटकर, ऊपर के मोटे छिलके निकालकर उसको चारगुने पानी में उबालकर तीन चार उफान आने के बाद उतार लो। एक घण्टे तक ढक कर रख दो। फिर पानी छानकर अलग करो। इसको 'बार्ली वोटर' कहते हैं। बार्ली वोटर पीने से प्यास, उल्टी, अतिसार, मूत्रकृच्छ, पेशाब का अटकना, पेशाब में जलन करें ऐसे रोग, मूत्रदाह, वृक्कशूल, मूत्राशयशूल आदि में लाभ होता है।

एक सेर जौ का आटा, एक सेर ताजा घी और एक सेर मिश्री को कूटकर कलाईयुक्त बर्तन में गर्म करके, उसमें एक तोला काली मिर्च एवं दो तोला इलाइची के दानों का चूर्ण मिलाकर पूर्णिमा की रात्रि में छत पर ओस में रख दो। उसमें से हररोज सुबह पाँच पाँच तोला लेकर खाने से धातुपुष्टि होती है।

जौ के आटे को एवं मिश्री को समान मात्रा में मिलाकर खाने से बार-बार होनेवाला गर्भपात रुकता है।

शरीर स्वास्थ्य

भूख रोकने से होनेवाले रोग

अंगभंगारुचिग्लानिकार्श्यशूलभ्रमा: क्षुध:।

भूख रोकने से, भूख लगने पर भी न खाने से शरीर टूटता है, अरुचि, ग्लानि और दुर्बलता आती है। पेट में शूल-दर्द होता है, चक्कर आते हैं।

पेट में जब दर्द हो तब खास जान लेना चाहिए कि यह दर्द अजीर्ण के कारण तो नही है? दर्द अजीर्ण के कारण हो और उसे भूख के कारण होनेवाला दर्द मानकर अधिक भोजन लिये जाने पर परिस्थिति बिगड़ जाती है।

प्यास रोकने से होनेवाले रोग

शोषांगसादबाधिर्यसम्मोहभ्रमहृद्गदा:।
तृष्णाया निग्रहात्तत्र.....

प्यास रोकने से मुखशोष (मुँह का सूखना), शरीर की शिथिलता, अंगों में कार्य करने की अशक्ति महसूस होना, बहरापन, मोह, भ्रम, चक्कर आना, आँखों में अन्धापन आना आदि रोग हो सकते हैं। शरीर में धातुओं की कमी होने से हृदय में भी विकृति हो सकती है।

खाँसी रोकने से होनेवाले रोग

कासस्य रोधात्तद्वृद्धि: श्वासारुचिहृदामया:।
शोषो हिध्मा च...

(अनु. पेज ४० पर...)

ऑपरेशन के वक्त पू. बापू के दर्शन एवं यौगिक चमत्कार

मैं आमेट का एक नम्बर का शराबी था। पानी की तरह शराब पीता रहता था। अपने आपको शेर मानता था। गाँव के लोग मुझसे डरते भी थे। मुझे पू. बापू के प्रथम दर्शन के साथ ही न जाने क्या हुआ कि मैंने पू. बापू से सपरिवार दीक्षा ले ली। इससे पहले मेरी कमाई

का बड़ा हिस्सा जो दुर्व्यसनों में बरबाद होता था वह अब बंद हो गया। पहले कई बार मेरे घर में आसुरी दृश्य खड़े होते थे। उसकी जगह अब सब में भक्तिभाव का गहरा असर है। अब मेरा पूरा परिवार नियमित रूप से गुरुमंत्र का जप, आसारामायण का पाठ करता है।

एक बार मैं उदयपुर से मोटर साईकिल पर आ रहा था। मेरा गुरुमंत्र जप निरंतर चल रहा था। गाँव केलवा के पास एक जीपवाले ने बुरी तरह झपट में ले लिया। मैं बेहोश था। मुझे आमेट अस्पताल में दाखिल किया गया। जब मुझे होश आया तब मैंने देखा कि मेरे परिवार के लोग पू. बापू को प्रार्थना कर रहे थे। मेरे बचने की कोई संभावना न थी। मुझे २०७ टांके आये थे। १५ दिन अस्पताल में रहकर घर आया। परंतु मेरे दाहिने हाथ में जो फ्रेक्चर हो गया था, उसका दर्द जारी था। अब उदयपुर के डाक्टरों के पास ऑपरेशन होना था। यह ऑपरेशन अगर फेल हो तो हाथ खोने का भय था। सुबह चार बजे ऑपरेशन था। सारी रात मुझे नींद न आयी। रातभर गुरुमंत्र का जप एवं गुरुदेव को प्रार्थना करता रहा।

दिनांक : ३ - १२ - ८७ के दिन 'अंकित आर्थोपिडिक' (मधुवन, उदयपुर) के डॉ. श्री रतनलाल शर्मा ने मेरा ऑपरेशन किया। ऑपरेशन थियेटर में मुझे बेहोशी में लाने के लिए दो इंजेक्शन दिये गये। पर मेरे गुरुदेव की अलौकिक कृपा का चमत्कार देखो ! जहाँ मुझे बेहोश किया जा रहा था, उसी वक्त मुझे होश मिल रहा था। मैं स्थूल शरीर से अलग हो गया। ऑपरेशन थियेटर के मुख्य द्वार के सामने मेरे गुरुदेव पू. बापू श्वेत वस्त्रो में सजे हुए फकीरी चाल में चले आ रहे थे। मैंने साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया।' मैं रोने लगा तो बापू ने कहा :

"अरे ! क्यों रोता है ? तुझे कुछ नहीं होगा। चिन्ता मत कर। अभी अपना ऑपरेशन देख।"

मैं एक कोने में खड़ा रहा। पू. बापू भी वहीं खड़े रहे। दो डॉक्टर, एक कम्पाउन्डर ऑपरेशन में लगे थे। नर्स ने मेरा हाथ पकड़ा हुआ था। मैं कभी तो ऑपरेशन को देखता, कभी पू. बापू को गद्गद् होकर देखता।"

जैसे ही ऑपरेशन पूरा हुआ, पूज्य बापू की कृपालु मूर्ति और उसके साथ का श्वेत प्रकाश लुप्त हो गये। मुझे (स्थूल शरीर में) होश आया तब मेरी पत्नी पलंग के सामने गुरुमंत्र का जप कर रही थी।

दूसरे दिन जब डॉक्टर और कम्पाउन्डर मेरा ड्रेसिंग करने आये तब मैंने मेरा अलौकिक अनुभव, ऑपरेशन का साक्षित्व आदि उन्हें बताया। भौतिकवाद में उलझे

(अनु. पेज ८ पर)

"अरे ! क्यों रोता है ? तुझे कुछ नहीं होगा। चिन्ता मत कर। अभी अपना ऑपरेशन देख।"

संस्था समाचार

(सिंहस्थ समाचार)

सिंहस्थ, ९२ में संत श्री आसारामजी आश्रम के साधकों, भक्तों के द्वारा उत्साह, प्रेम और सेवा के मूर्तस्वरूप जिस नगर का निर्माण हुआ उस 'संत श्री आसारामजी नगर' नामक एक ही नगर ने पूरे सिंहस्थ के शुभ माहौल का ७०-८० प्रतिशत हिस्सा आच्छादित कर दिया था। उज्जैन की गली-गली में हर जगह, अंकपात क्षेत्र में, मंगलनाथ क्षेत्र में, महाकाल क्षेत्र में, दत्त अखाड़ा क्षेत्र में सर्वत्र सबके मुँह भूरि-भूरि प्रशंसा अगर किसी आयोजन की हुई हो तो वह है 'संत श्री आसारामजी नगर।'

इन्दौर, उज्जैन तथा भोपाल के अखबारों ने, 'इंडिया टुडे' जैसे कई सामयिकों ने भरपूर प्रशंसा करते हुए लिखा :

"सिंहस्थ की ८० प्रतिशत जनता संत श्री आसारामजी नगर में लाभ ले रही है।"

'अखबारों के झरोखे से...' विभाग में दैनिक भास्कर, नई दुनिया, दैनिक अवंतिका, चौथा संसार, स्वदेश, लोक स्वामी, नवभारत, अर्थ चेतना आदि कई अखबारों के अहवाल पढ़कर आपको सिंहस्थ के माहौल की कुछ झाँकी मिली होगी।

सिंहस्थ में पूज्यपाद गुरुदेव के सत्संग का लाभ भक्तों, साधकों एवं श्रद्धालुओं को पूरे एक महीने तक सुबह शाम मिलता रहा। सिंहस्थ के मुख्य मुख्य कार्यक्रमों की सूचि इस प्रकार है :

* १६ अप्रैल के दिन पूज्य गुरुदेव का नगरप्रवेश एवं भव्य शोभायात्रा।
* २३ अप्रैल के दिन पूज्य गुरुदेव का स्वर्ण जयंती महोत्सव।
* ३० अप्रैल के दिन अखिल भारतीय संत समिति के ७ वें अधिवेशन में गुरुदेव का प्रेरक प्रवचन।
* ३० अप्रैल के दिन पूज्यश्री के करकमल द्वारा उज्जैन चेरीटेबल ट्रस्ट होस्पीटल का उद्‌घाटन।
* ७ मई के दिन सुबह १० बजे क्षिप्रा में स्नान।
* १५ मई के दिन संत श्री आसारामजी नगर में विराट संत-सम्मेलन।
* १६ मई के दिन ब्राह्ममुहूर्त में सबसे पहले आश्रम के ब्रह्मचारी साधकों के साथ पूज्यश्री का शाही स्नान।
* १७ मई के दिन पूज्य गुरुदेव के पावन करकमलों के द्वारा उज्जैन में मंगलनाथ रोड़ पर संत श्री आसारामजी आश्रम का शिलारोपण हुआ। अब उज्जैन तीर्थ में पूज्यश्री का सान्निध्य, सत्संग एवं दर्शन सबको सुलभ होगा।

पूज्यश्री के दर्शन एवं आशीर्वाद लेने के हेतु कई राजनेता, अध्यक्ष, कमिश्नर, साधु-संत उज्जैन में आये थे। सिंहस्थ केन्द्रिय समिति के अध्यक्ष राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया, सिंहस्थ मेला प्रभारी मंत्री श्री बाबुलाल जैन, मध्य प्रदेश शासन के मुख्य मंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा, केन्द्रिय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री माधवराव सिंधिया, केन्द्रिय मंत्री श्री अर्जुनसिंह, उज्जैन सिंहस्थ के कमिश्नर श्री सुरजित सिंह, सिंहस्थ के संभाग आयुक्त श्री तिवारी, मध्य प्रदेश के अग्रीम समाचार पत्र 'नई दुनिया' के मालिक श्री छजलाणी एवं हिन्दू, बोहरे, सिख जनता के प्रतिष्ठित लोग एवं विदेशी लोग भी पूज्यश्री की अमृतवाणी का लाभ लेकर धन्य बने।

दिनांक १७ से २१ मई के दौरान पूज्य बापू पंचेड़ (रतलाम) के आश्रम में एकान्तवास में रहे।

सैलाना में सत्संग समारोह

दिनांक २२ से २४ मई तक, तीन दिन के लिए पूज्य बापू का सत्संग समारोह सैलाना (म. प्र.) में हुआ। आदिवासी लोग भी दूर दूर से आकर इस कार्यक्रम में उमड़ पड़े थे। पचास हजार से भी अधिक आदिवासियों ने भोजन, अन्न-वस्त्र दान का लाभ लिया।

आदिवासियों ने शराब, बीड़ी न पीने की प्रतिज्ञा ली। जिन आदिवासियों को लालच देकर जबरन धर्मपरिवर्तन कराके ईसाई बनाया गया था उनका पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश करवाया गया। उनको तुलसी की मालाएँ पहनाई गईं।

जावद में सत्संग समारोह

दिनांक २८ से ३१ मई तक जावद (जि. मन्दसौर) में पूज्य श्री का अभूतपूर्व दिव्य सत्संग समारोह आयोजित किया गया। हायर सेकन्डरी स्कूल के मैदान में विशाल पंडाल लगाया गया। एक लाख से भी अधिक लोग

हररोज पूज्यश्री के प्रेमसभर, भक्ति, योग एवं ज्ञान की त्रिवेणी में पावन प्रेरक वचनों का लाभ लेते रहे। हररोज पंडाल बड़ा किया जाता फिर भी छोटा ही पड़ता गया, इतना जन-समूह सत्संग सुनने आ जाता। आसपास के गाँवों में से ट्रेक्टर, जीप आदि वाहनों के द्वारा लोगों का तांता बना रहा। कई लोग तो रात्रि निवास भी पंडाल में ही कर लेते थे। सबके लिए रियायती मूल्य से भोजनादि की व्यवस्था सुलभ बनाई गई थी। एक छोटे-से गाँव में मानो 'मिनी सिंहस्थ मेला' लग गया था।

वृंदावन में सत्संग समारोह

दिनांक २ और ३ जून के दौरान पूज्यश्री का मंगल प्रवचन कुंजगलियों की नगरी वृन्दावन में हुआ। उसमें भी हजारों हरिभक्तों, साधुओं, मण्डलेश्वरों आदि सभी ने इन आगम निगम के ओलिया संत पुरुष के दर्शन एवं प्रवचन का लाभ लिया।

दिल्ली में 'ज्ञान गंगा' का उद्घाटन

दिनांक ४ जून के दिन दिल्ली योग वेदान्त सेवा समिति ने राजधानी एवं आसपास के राज्यों के कोने कोने में भारतीय संस्कृति के ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु निर्मित 'ज्ञान गंगा' वान का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव के पावन करकमलों के द्वारा करवाया।

...और तदनन्तर पूज्यश्री का अज्ञात एकान्तवास हिमालय के तपोवन में...

गुरुपूर्णिमा अहमदाबाद आश्रम में

१४ जुलाई के दिन आनेवाले गुरुपूर्णिमा महोत्सव की तैयारियाँ धमाके के साथ अहमदाबाद के आश्रम में चल रही हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन होनेवाले गुरुदर्शन का इन्तजार करनेवाले... दिन गिननेवाले गुरुभक्तों को धन्य है... !

*

'ऋषि प्रसाद' के सेवाभावी एजेन्ट भाइयों एवं सदस्यों को निवेदन

प्रिय आत्मीय बन्धुओं... सादर सप्रेम सद्गुरु स्मरण... हरि स्मरण।

दो साल पहले गुजराती में 'ऋषि प्रसाद' रूपी वटवृक्ष का बीजारोपण किया गया और वह बीज तुरन्त अंकुरित होकर दो साल में तो विशाल वटवृक्ष बन गया है। ऋषियों के इस प्रसाद का... 'ऋषि प्रसाद' का रसपान करनेवाले सदस्यों की संख्या दूसरे वर्ष की पूर्णाहुति में ६१००० का अंक पार कर चुकी है। इस अंक के साथ 'ऋषि प्रसाद' तीसरे वर्ष में प्रविष्ट हो रहा है।

स्मरण है न हमने किये हुए शुभ संकल्प का? हमें 'ऋषि प्रसाद' मनभावन लगा, जीवन को पुष्टिकारक लगा तो हमारे अन्य भाई-बहन भी लाभान्वित बनें, ऋषियों का स्नेह-प्रसाद प्राप्त करें, जीवन धन्य बनायें ऐसे पुरुषार्थ में हम लोग संलग्न हैं। हमारे इस पुरुषार्थ की पुष्पवाटिका पर परमात्मा एवं परमात्मा के साथ अभिन्न बने हुए संत-महापुरुषों-सद्गुरुओं की अमीवृष्टि निरन्तर हो रही है। इस तीसरे वर्ष की पूर्णाहुति तक एक लाख आठ हजार (एक माला!) परिवारों में 'ऋषि प्रसाद' पहुँचने लगे ऐसा लक्ष्य सिद्ध करने के लिए हम कृत संकल्प हैं।

परम कृपालु परमात्मा और सद्गुरुदेव के इस दैवी कार्य में उपरोक्त संकल्प साकार करने के लिए पुराने अनुभवी सेवाधारी एजेन्ट भाई तो उत्साह से लगे हुए हैं ही... वे अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करेंगे ही... अधिक सदस्य बनाएंगे ही... इनके अलावा जो नये सेवाधारी उत्साही भाई इस सेवा कार्य में सक्रिय होना चाहें तो वे 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय का संपर्क करें।

किसी भी मास से 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बन सकते हैं। उस मास से लेकर १ वर्ष तक यह सदस्यता चालू रहेगी। चालू मास का अंक अगर स्टॉक में नहीं होगा तो दूसरे मास से यह सदस्यता चालू होगी। इस प्रकार हर सदस्य को १२ महीने में कुल ६ अंक प्राप्त होंगे।

कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय सदस्य को अपना रसीद नंबर एवं अपना स्थायी सदस्य क्रमांक लिखना अत्यंत आवश्यक है।

राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया, म.प्र. के मुख्य मंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा, कुंभमेला प्रभारी मंत्री श्री बाबुलाल जैन दो घण्टा सत्संग श्रवण के बाद अहोभाव से पू. बापू का अभिवादन करते हुए...

जगद्गुरु, महंत, मंडलेश्वर, वृन्दावन के वामदेवजी महाराज एवं हजारों साधु-संतों के बीच भारतीय संस्कृति के महत्तम प्रचार प्रसार के लिये... छोटे छोटे दायरे एवं संकीर्णता मिटाकर विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के लिए अखिल भारतीय संत समिति के ७ वें अधिवेशन में पू. बापू का सन्देश...
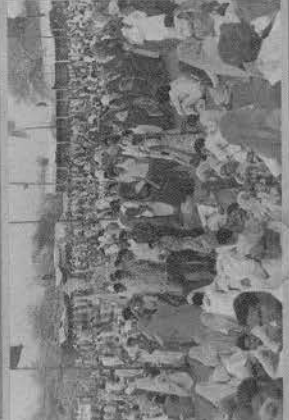
संत श्री आसारामजी नगर, उज्जैन में विशाल जन समुदाय का विहंगम दृश्य...

उज्जैन चैरीटेबल ट्रस्ट हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर का उद्घाटन... पूज्यश्री की सत्संग-वर्षा... पायलट बाबा (दाँयें), लंडन के संत रामबाबा (बाँयें)।

म.प्र. के मुख्य मंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा सपरिवार पू. बापू के सत्संग, दर्शन का लाभ एवं आशीर्वाद लेते हुए... सत्संग श्रवण के बाद भावविभोर होकर उन्होंने कहा : "हे संत प्रवर! मैं राजनीति की काली कोठरी में रहता हूँ। इसकी कालिमा से बच निकलूँ यही याचना है मेरी।"